दसकालियं

(अपर नाम)

दसवेयालियं

चतुर्दशपूर्वधरार्यशय्यंभवनिर्यूढ

श्री दशवैकालिक सूत्र

(संशुद्ध मूल पाठ)

श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र
(स्वाध्याय संस्करण)

संस्करण : **सन् 2017**

(सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित)

प्रतियाँ : 500

रियायती मूल्य : 20/-

अर्थ सहयोगी : स्वधर्मी परिवार

पुस्तक प्राप्ति स्थान : **श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ**
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर
334401 (राज.)
फोन: 0151-2270261-62, 2270359

प्रकाशकीय

श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र जैनागमों के सर्वाधिक पढ़े जाने वाले आगमों में से एक है। आवश्यक सूत्र के पश्चात् इसी सूत्र की वाचना दी जाती है। इसमें सम्पूर्ण साध्वाचार संक्षेपत: समाहित है। इसको कण्ठस्थ करने की परम्परा भी व्यापक रूप से विद्यमान है। विविध स्थानों से इसका प्रकाशन हुआ है। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ से भी इसका प्रकाशन पूर्व में अनेक बार हुआ है। प्रस्तुत संस्करण पूर्व के सभी संस्करणों से भिन्न होने के कारण अपने आप में विशिष्ट है। इसकी विशिष्टता का कारण इस संस्करण के पूर्व हुई गहन आगमिक शोध है। आगमों के निगूढ ज्ञाता, परम आराध्य आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के सानिध्य में हुई इस शोध से इस सूत्र के मूलपाठ के विषय में अनेक प्रामाणिक एवं शुद्ध मूल-पाठों का निर्णय हुआ। प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों, टीकाओं, चूर्णिओं एवं अन्य अनेकानेक ग्रन्थों के आधार से अनेक आगमिक शुद्ध पाठों का सम्यग् निर्णय हुआ। मूलपाठ की शुद्धता के संदर्भ में हुए उन उत्तम निर्णयों का ज्ञान प्राप्त कर हमारा मन आनन्द विभोर हो गया। तदनुसार श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के अब तक के प्रकाशित संस्करणों से कहीं अधिक शुद्धतर संस्करण को पाठकों के करकमलों में सौंपते हुए हम हर्षानुभूति कर रहे हैं। पाठ निर्णयों सम्बन्धी विस्तृत विवेचन काफी तकनीकी एवं अति

विस्तृत होने से यहाँ नहीं दिया गया है। तद्विषयक विशेष जिज्ञासु पाठक 'श्री दशवैकालिक सूत्र' का विद्वत्संस्करण देखें। आगमों में रूचिशील श्रावकवर्ग श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के इस स्वाध्याय संस्करण का स्वाध्याय करके महान कर्म निर्जरा के कार्य में प्रवृत्त होंगे।

उच्चारण सम्बन्धी निर्देश

1. जहाँ 'ऽ' या 'ऽऽ' अवग्रह चिह्न है, वहाँ अवग्रह चिह्न सम्बन्धी कोई उच्चारण नहीं होता है। अवग्रह चिह्न मात्र सन्धि बताने के लिए है। अत: 'ऽ' या 'ऽऽ' के स्थान पर अ अथवा आ का उच्चारण नहीं होगा। यथा- नामऽज्झयणं (अध्य. -4, गाथा-1) यथा- नाऽऽलिहेज्जा (अध्य.-4 गाथा-30)।

2. इस मूलपाठ में कुछ स्थानों पर ए अथवा ओ को ऍ (चन्द्र सहित) अथवा ओॅ (चन्द्र सहित) के रूप में अंकित किया गया है। इसका कारण आगे स्पष्ट किया जा रहा है। संस्कृत भाषा में स्वरों का उच्चारण तीन प्रकार से माना गया है यथा- ह्रस्व, दीर्घ एवं प्लुत। ह्रस्व स्वर के उच्चारण में अल्प समय लगता है, दीर्घ में उससे अधिक एवं प्लुत में उससे भी अधिक। इसे मुर्गे की बांग के उदाहरण से समझाया गया है यथा- मुर्गे की बांग को कुकूकूऽऽ माना जाय तो प्रथम कु के उच्चारण में अल्प समय लगता है उतना समय ह्रस्व स्वर के उच्चारण का है। द्वितीय कू के उच्चारण में अधिक समय लगता है उतना समय दीर्घ स्वर के उच्चारण में तथा तृतीय कूऽऽ के उच्चारण में और अधिक समय लगता है उतना समय प्लुत स्वर के उच्चारण में लगता है। संस्कृत में ए तथा ओ को ह्रस्व स्वर के रूप में उच्चारण मान्य नहीं है जबकि प्राकृत (या अर्धमागधी) में ए तथा ओ का कहीं दीर्घ स्वर के रूप में तो कहीं ह्रस्व स्वर

के रूप में भी माना है। यहाँ प्रस्तुत श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के पाठों में भी जहाँ छन्द की दृष्टि से ए तथा ओ का ह्रस्व उच्चारण करना अपेक्षित है वहाँ ऍ अथवा ओॅ अंकित हैं, उसका तात्पर्य यह समझना चाहिए कि उन स्थलों पर इन स्वरों का ह्रस्व उच्चारण करना है, यथा- 'समाऍ पेहाऍ परिव्वयंतो' (अध्य.-2 गाथा-4), 'भुंजंतोॅ भासंतो' (अध्य.-4 गाथा-43)।

3. इसी प्रकार जहाँ 'इँ' अथवा 'हिँ' (चन्द्र सहित अनुस्वार) अंकित है वहाँ इन वर्णों का ह्रस्व उच्चारण करना है। यथा:- 'पाण भूयाइँ हिंसई' (अध्य.-4 गाथा-36), 'ससरक्खेहिँ पाएहिं' (अध्य.-5 उद्दे.-1 गाथा-7) इत्यादि।

4. पूर्व प्रचलित पाठों से यहाँ प्रदत्त पाठों की यथास्थान भिन्नता को देखकर पाठक व्यामोहित न होवें एवं इस शुद्ध पाठ को ही कण्ठस्थ करें व इसी का स्वाध्याय करें।

संयोजक

आगम एवं तत्त्व प्रकाशन समिति

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

अस्वाध्यायिक

निम्नलिखित बत्तीस अस्वाध्यायिक के कारणों को टालकर स्वाध्याय करना चाहिए।

अंतरिक्ष संबंधी 10 अस्वाध्यायिक

क्र.	नाम	अंतरिक्ष संबंधी 10 अस्वाध्याय	काल मर्यादा
1.	उल्कापात	रेखायुक्त (पीछे पूँछ के समान) या प्रकाश युक्त तारे का गिरना किसी	एक प्रहर तक
2.	दिग्दाह	दिशा में महानगर जलने के समान ऊपर प्रकाश नीचे अधंकार दिखाई देना	एक प्रहर तक
3.	गर्जित	मेघ गर्जना होना	दो प्रहर तक
4.	विद्युत	बिजली चमकना	एक प्रहर तक

नोट:- सूर्य के साथ आर्द्रा नक्षत्र के योग से लेकर स्वाति नक्षत्र के योग होने तक मेघ गर्जना और बिजली चमकना संबंधी अस्वाध्यायिक नहीं माना जाता। आर्द्रा नक्षत्र से स्वाति नक्षत्र का काल तारीख के हिसाब से 21 जून से 25 अक्टूबर के लगभग होता है।

5.	निर्घात	बादल के होने पर या न होने पर व्यन्तर कृत महागर्जना के समान ध्वनि का होना। वर्तमान में बिजली कड़कना/गिरना इसके अन्तर्गत माना जाता है।	आठ प्रहर तक

6. यूपक	शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया व तृतीया को रात्रि की प्रथम पौरुषी पर्यन्त। ये पक्खी के बाद की तीन रात्रियाँ समझना, चाहे पक्खी चतुर्दशी की हो या अमावस्या की।	प्रहर रात्रि तक
7. यक्षादीप्त	आकाश में एक दिशा में बीच-बीच में (एक-एक कर) व्यन्तर (देवता) कृत विद्युत् के समान प्रकाश होना	एक प्रहर तक
8. धूमिका	काली धूँवर (अंधकार युक्त, धुँए के समान) का आना	जब तक रहे
9. महिका	श्वेत धूँवर का आना	जब तक रहे
10. रज उद्घात	चारों दिशाएँ धूल से भर जाने पर सब ओर अंधकार जैसा दिखाई दे (चाहे वायु हो या न हो)	जब तक रहे

(दिग्दाह एवं यक्षादीप्त वर्तमान में कम दृष्टिगोचर होते हैं)

औदारिक संबंधी अस्वाध्यायिक

11-13.हड्डी,
रक्त, माँस

''तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय संबंधी अस्वाध्यायिक''

• रक्त सहित चर्म, रुधिर, माँस, अस्थि, अण्डा, अण्डे का कलल या पशु-पक्षी का शव आदि साठ हाथ के भीतर पड़े हो तो उपर्युक्त सभी जब से जीव रहित हुए तब से (चर्म, रूधिर, माँस आदि के रहने पर भी तीन प्रहर के बाद अस्वाध्यायिक नहीं रहता)	तीन प्रहर तक
• किसी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय (बड़ी कायवाले) की जहाँ घात (तिर्यञ्च या मनुष्य के द्वारा) हुई हो तो वहाँ चारों ओर साठ हाथ तक (कम से कम 3 प्रहर टालना आवश्यक है, चाहे सूर्योदय हो भी गया हो)	अगला सूर्योदय न होवे तब तक
• पका हुआ मांस अस्वाध्यायिक नहीं है।	
• साठ हाथ के भीतर जर वाले पशुओं की प्रसूति हो जर गिरने के बाद	जर गिरे तब तक तीन प्रहर तक
• साठ हाथ के भीतर बिना जर वाले पशुओं की प्रसूति के बाद	तीन प्रहर तक

''गर्भज मनुष्य संबंधी अस्वाध्यायिक''

• सौ हाथ के भीतर रक्त सहित चर्म, खून, माँस यदि पड़े हो तो ये पदार्थ जब से जीव रहित हुए, तब से (उसके बाद नहीं, चाहे वह पदार्थ वहाँ पड़ा हो या न हो)	आठ प्रहर तक
• जिस गली/गृहपंक्ति में से शव जब तक नहीं निकाला जाए तब तक उस गली/गृहपंक्ति में अस्वाध्यायिक रहता है।	

- मनुष्य की हड्डी सौ हाथ के भीतर हो ता जब से जीव रहित हुई तब से (12 वर्ष के बाद अस्वाध्यायिक नहीं। 12 वर्ष के पहले ही यदि अस्थि जली हुई हो या वर्षा आने से धुल गई हो तो जलने व धुलने के बाद अस्वाध्यायिक नहीं रहता) — बारह वर्ष तक
- खून यदि विवर्ण हो गया हो यानि उसकी पर्याय/रंग बदल गया हो तो अस्वाध्यायिक नहीं होता
- बालक-बालिका के जन्म के क्रमशः सात और आठ दिन तक 100 हाथ के भीतर अस्वाध्यायिक माना जाता है।

14. अशुचिसामन्त	मल, मूत्र, कलेवर आदि अशुभ पदार्थ	दिखाई दे या उनकी दुर्गन्ध आये
15. श्मशानसामन्त	श्मशान भूमि के चारों ओर	100-100 हाथ तक
16. चन्द्रग्रहण	चन्द्रग्रहण जिस क्षेत्र में दिखे वहाँ	जघन्य 8 प्रहर और उत्कृष्ट 12 प्रहर तक
17. सूर्यग्रहण	सूर्यग्रहण जिस क्षेत्र में दिखे वहाँ	जघन्य 12 प्रहर और उत्कृष्ट 16 प्रहर तक

चंद्रग्रहण, सूर्यग्रहण जिस क्षेत्र में दिखे वहाँ अस्वाध्यायिक समझना।

18. पतन	प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, राज्यपाल, मुख्यमंत्री के कालगत हो जाने पर जिस क्षेत्र में वातावरण विक्षोभ हो तो	जब तक विक्षोभ रहे
19. राजव्युद्ग्रह	युद्ध भूमि के आसपास	जब तक युद्धजनित क्षोभ रहे
20. उपाश्रय में औदारिक शरीर	उपाश्रय की सीमा में तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय या मनुष्य का शव पड़ा रहे	जब तक शव पड़ा रहे तब तक
21-28. चार पूर्णिमा और इसके बाद की प्रतिपदा	आषाढ़, आश्विन, कार्तिक व चैत्र इन चारों पूर्णिमाओं को तथा इन पूर्णिमा के बाद की प्रतिपदाओं को	दिन-रात

- जिस दिन पंचांग (कैलेण्डर) में पूनम व प्रतिपदा बताई हो उस दिन अस्वाध्यायिक मानना।
- यदि दो पूनम हो तो दोनों पूर्णिमा को अस्वाध्यायिक मानना, प्रतिपदा को नहीं।
- यदि दो प्रतिपदा हो तो प्रथम प्रतिपदा और पूर्णिमा को अस्वाध्यायिक मानना।
- यदि पूर्णिमा क्षय हो तो चतुर्दशी और प्रतिपदा को अस्वाध्यायिक मानना।
- यदि प्रतिपदा क्षय हुई हो तो चतुर्दशी व पूर्णिमा को अस्वाध्यायिक मानना।

29-32. संधि समय	सूर्योदय एवं सूर्यास्त, मध्याह्न व अर्धरात्रि इन चार सन्ध्याओं में	एक-एक मुहूर्त्त

(सूर्योदय एवं सूर्यास्त के पूर्व व पश्चात् आधा-आधा मुहूर्त्त और दिन

व रात्रि के मध्य भाग के पूर्व व पश्चात् आधा-आधा मुहूर्त्त तक अस्वाध्यायिक माना जाता है।)

कालिक सूत्र-11 अंग, 4 छेद तथा मूल सूत्र में एक उत्तराध्ययन सूत्र। उपांग सूत्र में जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, चंद्रप्रज्ञप्ति, निरयावलिया पंचक (निरयावलिया, कप्पवडंसिया, पुप्फिया, पुप्फचूलिया, वण्हिदसा)। शेष सभी **उत्कालिक सूत्र** हैं। किन्तु 32वाँ आवश्यक सूत्र **नोकालिक-नोउत्कालिक सूत्र** है।

कालिक सूत्र का स्वाध्याय दिन एवं रात्रि के प्रथम एवं अंतिम प्रहर में एवं उत्कालिक सूत्र का स्वाध्याय किसी भी समय अस्वाध्यायिक के कारणों को टालकर करना चाहिए। उत्काल में कालिक सूत्र की वाचना 9 गाथा से अधिक नहीं दी जा सकती।

स्वाध्याय का वाचन करने के पश्चात् 'आगमे तिविहे' का पाठ बोलें। एक प्रहर लगभग 3 घंटे का होता है।

-----●-----

दसवेयालियं

(दशवैकालिक सूत्र)

पढमं दुमपुप्फियऽज्झयणं

धम्मो मंगलमुक्कट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।।1।।
जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियई रसं।
न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं।।2।।
एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया।।3।।।
वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोइ उवहम्मई।
अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा।।4।।
महुकारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया।
नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो।।5।।
त्ति बेमि।

।। पढमं दुमपुप्फियऽज्झयणं समत्तं।।1।।

बिइयं सामण्णपुव्वगऽज्झयणं

कहं नु कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारए।
पए पए विसीयंतो, संकप्पस्स वसं गओ?।।1।।
वत्थ-गंधमलंकारं, इत्थीओ सयणाणि य।
अच्छंदा जे न भुंजंति, न से चाइ त्ति वुच्चइ।।2।।
जे य कंते पिए भोए, लद्धे विप्पिट्ठि कुव्वई।
साहीणे चयई भोए, से हु चाइ त्ति वुच्चई।।3।।
समाऍ पेहाऍ परिव्वयंतो, सिया मणो नीसरई बहिद्धा।
न सा महं नो वि अहं पि तीसे, इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं।।4।।
आयावयाही चय सोगमल्लं, कामे कमाही कमियं खु दुक्खं।।
छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं, एवं सुही होहिसि संपराए।।5।।
पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं।
नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे।।6।।
धिरत्थु ते जसोकामी, जो तं जीवियकारणा।
वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे।।7।।
अहं च भोगरायस्स, तं च सि अंधगवण्हिणो।
मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर।।8।।

जइ तं काहिसि भावं, जा जा दच्छसि नारिओ।
वायाइद्धो व्व हढो, अट्ठियप्पा भविस्ससि।।9।।
तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं।
अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ।।10।।
एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसोत्तिमो।।11।।
त्ति बेमि।

।। बिइयं सामण्णपुव्वगऽज्झयणं समत्तं।।2।।

तइयं खुड्डियायारकहऽज्झयणं

संजमे सुट्ठियप्पाणं, विप्पमुक्काण ताइणं।
तेसिमेयमणाइण्णं, निग्गंथाण महेसिणं।।1।।
उद्देसियं कीयगडं, नियागं अभिहडाणि य।
राइभत्ते सिणाणे य, गंध मल्ले य वीयणे।।2।।
सन्निही गिहिमत्ते य, रायपिंडे किमिच्छए।
संबाहण दंतपहोवणा य, संपुच्छण देहपलोयणा य।।3।।

अट्ठावए य नाली य, छत्तस्स य धारणट्ठाए।
तेगिच्छं पाहणा पाए, समारंभं च जोइणो।।4।।
सेज्जायरपिंडं च, आसंदी पलियंकए।
गिहंतरनिसेज्जा य, गायस्सुव्वट्टणाणि य।।5।।
गिहिणो वेयावडियं, जा य आजीववित्तिया।
तत्तानिव्वुडभोइत्तं, आउरस्सरणाणि य।।6।।
मूलए सिंगबेरे य, उच्छुखंडे अणिव्वुडे।
कंदे मूले य सच्चित्ते, फले बीए य आमए।। 7।।
सोवच्चले सिंधवे लोणे, रुमालोणे य आमए।
सामुद्दे पंसुखारे य, कालालोणे य आमए।।8।।
धूवणेत्ति वमणे य, वत्थीकम्म विरेयणे।
अंजणे दंतवणे य, गायाभंग विभूसणे।।9।।
सव्वमेयमणाइण्णं, निग्गंथाण महेसिणं।
संजमम्मि य जुत्ताणं, लहुभूयविहारिणं।।10।।
पंचासवपरिन्नाया, तिगुत्ता छसु संजया।
पंचनिग्गहणा धीरा, निग्गंथा उज्जुदंसिणो।।11।।
आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अवंगुता।
वासासु पडिसंलीणा, संजया सुसमाहिया।।12।।

परीसहरिऊदंता, धुयमोहा जिइंदिया।
सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा ,पक्कमंति महेसिणो।।13।।
दुक्कराइं करेत्ता णं, दूसहाइं सहेत्तु य।
केइत्थ देवलोगेसु, केइ सिज्झंति नीरया।।14।।
खवेत्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य।
सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिनिव्वुड।।15।।
त्ति बेमि।

।। तइयं खुड्डियायारकहऽज्झयणं समत्तं।।3।।

चउत्थं छज्जीवणियऽज्झयणं

सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु छज्जीवणिया नामऽज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती।।1।।

कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामऽज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती?।।2।।

इमा खलु सा छज्जीवणिया नामऽज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती। तं जहा- पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया तसकाइया।।3।।

पुढवि चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं।।4।।

आउ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं।।5।।

तेउ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं।।6।।

वाउ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं।।7।।

वणस्सइ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं, तं जहा-अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया, खंधबीया, बीयरुहा, सम्मुच्छिमा, तणलया वणस्सइकाइया, सबीया, चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं।।8।।

से जे पुण इमे अणेगे बहवे तसा पाणा तं जहा- अंडया, पोयया, जराउया, रसया, संसेइमा, सम्मुच्छिमा, उब्भिया,

उववाइया, जेसिं केसिंचि पाणाणं अभिक्कंतं पडिक्कंतं संकुचियं पसारियं रुयं, भंतं, तसियं, पलाइयं, आगइ-गइविन्नाया, जे य कीड-पयंगा, जा य कुंथु-पिवीलिया, सव्वे बेइंदिया, सव्वे तेइंदिया, सव्वे चउरिंदिया, सव्वे पंचिंदिया, सव्वे तिरिक्खजोणिया, सव्वे नेरइया, सव्वे मणुया, सव्वे देवा, सव्वे पाणा परमाहम्मिया, एसो खलु छट्ठो जीवनिकाओ तसकाओ त्ति पवुच्चइ।।9।।

इच्चेएहिं छहिं जीवनिकाएहिं नेव सयं दंडं समारंभेज्जा, नेवऽन्नेहिं दंडं समारंभावेज्जा, दंडं समारंभंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि।।10।।

पुढविक्कातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते।
अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उवट्ठावणाजोग्गो।।11।।
आउक्कातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते।
अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उवट्ठावणाजोग्गो।।12।।
तेउक्कातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते।
अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उवट्ठावणाजोग्गो।।13।।

वाउक्कातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते।
अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उवट्ठावणाजोग्गो।।14।।
वणस्सतिकातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते।
अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उवट्ठावणाजोग्गो।।15।।
तसकातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते।
अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उवट्ठावणाजोग्गो।।16।।
पुढविक्कातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते।
अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उवट्ठावणे जोग्गो।।17।।
आउक्कातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते।
अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उवट्ठावणे जोग्गो।।18।।
तेउक्कातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते।
अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उवट्ठावणे जोग्गो।।19।।
वाउक्कातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते।
अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उवट्ठावणे जोग्गो।।20।।
वणस्सतिकातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते।
अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उवट्ठावणे जोग्गो।।21।।
तसकातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते।
अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उवट्ठावणे जोग्गो।।22।।

पढमे भंते! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं। सव्वं भंते! पाणाइवायं पच्चक्खामि, से सुहुमं वा, बायरं वा, तसं वा, थावरं वा, नेव सयं पाणे अइवाएज्जा, नेवऽन्नेहिं पाणे अइवायावेज्जा, पाणे अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। पढमे भंते! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं।।23।।

अहावरे दोच्चे भंते! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं। सव्वं भंते! मुसावायं पच्चक्खामि, से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा। नेव सयं मुसं वएज्जा, नेवऽन्नेहिं मुसं वायावेज्जा, मुसं वयंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। दोच्चे भंते! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं।।24।।

अहावरे तच्चे भंते! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं। सव्वं भंते! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि, से गामे वा, नगरे वा, रन्ने वा, अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा।

नेव सयं अदिन्नं गेण्हेज्जा, नेवऽन्नेहिं अदिन्नं गेण्हावेज्जा, अदिन्नं गेण्हंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। तच्चे भंते! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं।।25।।

अहावरे चउत्थे भंते! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं। सव्वं भंते! मेहुणं पच्चक्खामि, से दिव्वं वा, माणुस्सं वा, तिरिक्खजोणियं वा। नेव सयं मेहुणं सेवेज्जा, नेवऽन्नेहिं मेहुणं सेवावेज्जा, मेहुणं सेवंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। चउत्थे भंते! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं।।26।।

अहावरे पंचमे भंते! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं। सव्वं भंते! परिग्गहं पच्चक्खामि, से अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा। नेव सयं परिग्गहं परिगेण्हेज्जा, नेवऽन्नेहिं परिग्गहं परिगेण्हावेज्जा, परिग्गहं परिगेण्हंते वि अन्ने न

समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। पंचमे भंते! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं।।27।।

अहावरे छट्ठे भंते! वए राईभोयणाओ वेरमणं। सव्वं भंते! राईभोयणं पच्चक्खामि, से असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा। नेव सयं राइं भुंजेज्जा, नेवऽन्नेहिं राइं भुंजावेज्जा, राइं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। छट्ठे भंते! वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं।।28।।

इच्चेयाइं पंच महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठयाए उवसंपज्जित्ता णं विहरामि।।29।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, दिया वा, राओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, एगओ वा, परिसागओ वा, से पुढविं वा, भित्तिं वा, सिलं वा, लेलुं वा, ससरक्खं वा कायं, ससरक्खं वा वत्थं, हत्थेण वा, पाएण वा, अंगुलियाए वा, कट्ठेण वा, कलिंचेण वा, सलागाए वा,

नाऽऽलिहेज्जा, न विलिहेज्जा, न घट्टेज्जा, न भिंदेज्जा, अन्नं नाऽऽलिहावेज्जा, न विलिहावेज्जा, न घट्टावेज्जा, न भिंदावेज्जा, अन्नं पि आलिहंतं वा, विलिहंतं वा, घट्टंतं वा, भिंदंतं वा, न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि।।30।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, दिया वा, राओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, एगओ वा, परिसागओ वा, से उदगं वा, ओसं वा, हिमं वा, महियं वा, करगं वा, हरतणुगं वा, सुद्धोदगं वा, उदओल्लं वा कायं, उदओल्लं वा वत्थं, ससणिद्धं वा कायं, ससणिद्धं वा वत्थं, नाऽऽमुसेज्जा, न संफुसेज्जा, न आवीलेज्जा, न पवीलेज्जा, न अक्खोडेज्जा, न पक्खोडेज्जा, न आयावेज्जा, न पयावेज्जा, अन्नं नाऽऽमुसावेज्जा, न संफुसावेज्जा, न आवीलावेज्जा, न पवीलावेज्जा, न अक्खोडावेज्जा, न पक्खोडावेज्जा, न आयावेज्जा, न पयावेज्जा, अन्नं पि आमुसंतं वा, संफुसंतं वा, आवीलंतं वा, पवीलंतं वा, अक्खोडेंतं वा, पक्खोडेंतं वा, आयावेंतं वा, पयावेंतं वा, न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं,

न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि।।31।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, दिया वा, राओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, एगओ वा, परिसागओ वा, से अगणिं वा, इंगालं वा, मुम्मुरं वा, अच्चिं वा, जालं वा, अलायं वा, सुद्धागणिं वा, उक्कं वा, न उंजेज्जा, न घट्टेज्जा, न उज्जालेज्जा, न निव्वावेज्जा, अन्नं न उंजावेज्जा, न घट्टावेज्जा, न उज्जालावेज्जा, न निव्वावेज्जा, अन्नं पि उंजंतं वा, घट्टंतं वा, उज्जालंतं वा, निव्वावंतं वा, न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि।।32।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, दिया वा, राओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, एगओ वा, परिसागओ वा, से सिएण वा, विहुवणेण वा, तालियंटेण वा, पत्तेण वा, साहाए वा, साहाभंगेण वा, पेहुणेण वा, पेहुणहत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकण्णेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा, अप्पणो वा कायं, बाहिरं वा वि पोग्गलं, न फुमेज्जा, न वीएज्जा,

अन्नं न फुमावेज्जा, न वीयावेज्जा, अन्नं पि फुमंतं वा, वीयंतं वा, न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि।।33।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, दिया वा, राओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, एगओ वा, परिसागओ वा, से बीएसु वा, बीयपइट्ठिएसु वा, रूढेसु वा, रूढपइट्ठिएसु वा, जाएसु वा, जायपइट्ठिएसु वा, हरिएसु वा, हरियपइट्ठिएसु वा, छिन्नेसु वा, छिन्नपइट्ठिएसु वा, सच्चित्तकोलपडिनिस्सिएसु वा, न गच्छेज्जा, न चिट्ठेज्जा, न निसीएज्जा, न तुयट्टेज्जा, अन्नं न गच्छावेज्जा, न चिट्ठावेज्जा, न निसीयावेज्जा, न तुयट्टावेज्जा, अन्नं पि गच्छंतं वा, चिट्ठंतं वा, निसीयंतं वा, तुयट्टंतं वा, न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि।।34।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, दिया वा, राओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, एगओ वा, परिसागओ वा, से कीडं वा, पयंगं वा, कुंथुं वा,

पिवीलियं वा, हत्थंसि वा, पायंसि वा, बाहुंसि वा, ऊरुंसि वा, उदरंसि वा, सीसंसि वा, वत्थंसि वा, पडिग्गहंसि वा, कंबलंसि वा, पायपुंछणंसि वा, रयहरणंसि वा, गोच्छगंसि वा, उंडुयंसि वा, दंडगंसि वा, पीढगंसि वा, फलगंसि वा, सेज्जंसि वा, संथारगंसि वा, अन्नयरंसि वा, तहप्पगारे उवगरणजाए तओ संजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय एगंते अवणेज्जा, नो णं संघायमावज्जेज्जा।।35।।

अजयं चरमाणो उ, पाण-भूयाइँ हिंसई।
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।36।।
अजयं चिट्ठमाणो उ, पाण-भूयाइँ हिंसई।
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।37।।
अजयं आसमाणो उ, पाण-भूयाइँ हिंसई।
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।38।।
अजयं सुयमाणो उ, पाण-भूयाइँ हिंसई।
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।39।।
अजयं भुंजमाणो उ, पाण-भूयाइँ हिंसई।
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।40।।
अजयं भासमाणो उ, पाण-भूयाइँ हिंसई।
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।41।।

कहं चरे? कहं चिट्ठे? कहमासे? कहं सुवे?।
कहं भुंजंतो भासंतो, पावं कम्मं न बंधई?।।42।।
जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सुवे।
जयं भुंजंतो भासंतो, पावं कम्मं न बंधई।।43।।
सव्वभूयऽप्पभूयस्स, सम्मं भूयाइं पासओ।
पिहियासवस्स दंतस्स, पावं कम्मं न बज्झइ।।44।।
पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्वसंजए।
अन्नाणी किं काहिति?, किं वा नाहिइ छेय पावगं?।।45।।
सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं।
उभयं पि जाणई सोच्चा, जं छेयं तं समायरे।।46।।
जो जीवे वि न याणति, अजीवे वि न याणति।
जीवाऽजीवे अयाणंतो, कह सो नाहिइ संजमं?।।47।।
जो जीवे वि वियाणति, अजीवे वि वियाणति।
जीवाऽजीवे वियाणंतो, सो हु नाहिइ संजमं।।48।।
जया जीवमजीवे य, दो वि एए वियाणई।
तया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणई।।49।।
जया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणई।
तया पुण्णं च पावं च, बंधं मोक्खं च जाणई।।50।।

जया पुण्णं च पावं च, बंधं मोक्खं च जाणई।
तया निव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे।।51।।
जया निव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे।
तया जहति संजोगं, सऽब्भिंतर-बाहिरं।।52।।
जया जहति संजोगं, सऽब्भिंतर-बाहिरं।
तया मुंडे भवित्ताणं, पव्वाइ अणगारियं।।53।।
जया मुंडे भवित्ताणं, पव्वाइ अणगारियं।
तया संवरमुक्कट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं।।54।।
जया संवरमुक्कट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं।
तया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं।।55।।
जया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं।
तया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छई।।56।।
जया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छई।
तया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली।।57।।
जया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली।
तया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जई।।58।।
जया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जई।
तया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ।।59।।

जया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ।
तया लोगमत्थयत्थो, सिद्धो भवइ सासओ।।60।।
सुहसायगस्स समणस्स, सायाउलगस्स निगामसाइस्स।
उच्छोलणापहोविस्स, दुलहा सोग्गई तारिसगस्स।।61।।
तवोगुणपहाणस्स, उज्जुमइ-खंति-संजमरयस्स।
परीसहे जिणंतस्स, सुलहा सोग्गई तारिसगस्स।।62।।
इच्चेयं छज्जीवणियं, सम्मद्दिट्ठी सया जए।
दुलहं लभित्तु सामण्णं, कम्मुणा ण विराहेज्जासि।।63।।
त्ति बेमि।।

।। चउत्थं छज्जीवणियऽज्झयणं समत्तं ।।

पंचमं पिंडेसणऽज्झयणं

पढमो उद्देसओ

संपत्ते भिक्खकालम्मि, असंभंतो अमुच्छिओ।
इमेण कमजोगेण, भत्त-पाणं गवेसए।।1।।
से गामे वा नगरे वा, गोयरग्गगओ मुणी।
चरे मंदमणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेयसा।।2।।
पुरओ जुगमायाए, पेहमाणो महिं चरे।
वज्जेंतो बीय-हरियाइं, पाणे य दग-मट्टियं।।3।।
ओवायं विसमं खाणुं, विज्जलं परिवज्जए।
संकमेण न गच्छेज्जा, विज्जमाणे परक्कमे।।4।।
पवडंते व से तत्थ, पक्खुलंते व संजए।
हिंसेज्ज पाण-भूयाइं, तसे अदुव थावरे।।5।।
तम्हा तेण न गच्छेज्जा, संजए सुसमाहिए।
सइ अन्नेण मग्गेण, जयमेव परक्कमे।।6।।
इंगालं छारियं रासिं, तुसरासिं च गोमयं।
ससरक्खेहिँ पाएहिं, संजओ तं न अक्कमे।।7।।

न चरेज्ज वासे वासंते, महियाए व पडंतिए।
महावाए व वायंते, तिरिच्छसंपाइमेसु वा।।8।।
न चरेज्ज वेससामंते, बंभचेरवसाणुए।
बंभयारिस्स दंतस्स, होज्जा तत्थ विसोत्तिया।।9।।
अणाययणे चरंतस्स, संसग्गीए अभिक्खणं।
होज्ज वयाणं पीला, सामण्णम्मि य संसओ।।10।।
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दोग्गइवड्ढणं।
वज्जए वेससामंतं, मुणी एगंतमस्सिए।।11।।
साणं सूइयं गाविं, दित्तं गोणं हयं गयं।
संडिब्भं कलहं जुद्धं, दूरओ परिवज्जए।।12।।
अणुन्नए नावणए, अप्पहिट्ठे अणाउले।
इंदियाइं जहाभागं, दमइत्ता मुणी चरे।।13।।
दवदवस्स न गच्छेज्जा, भासमाणो य गोयरे।
हसंतो नाभिगच्छेज्जा, कुलं उच्चावयं सया।।14।।
आलोयं थिग्गलं दारं, संधिं दगभवणाणि य।
चरंतो न विणिज्झाए, संकट्ठाणं विवज्जए।।15।।
रण्णो गहवईणं च, रहस्साऽऽरक्खियाण य।
संकिलेसकरं ठाणं, दूरओ परिवज्जए।।16।।

पडिकुट्ठकुलं न पविसे, मामगं परिवज्जए।
अचियत्तकुलं न पविसे , चियत्तं पविसे कुलं।।17।।
साणी-पावारपिहियं, अप्पणा न अवंगुणे।
कवाडं नो पणोल्लेज्जा , ओग्गहं सि अजाइया।।18।।
गोयरग्गपविट्ठो उ, वच्च-मुत्तं न धारए।
ओवासं फासुयं नच्चा, अणुन्नविय वोसिरे।।19।।
नीयदुवारं तमसं, कोट्ठगं परिवज्जए।
अचक्खुविसओ जत्थ, पाणा दुप्पडिलेहगा।।20।।
जत्थ पुप्फाइँ बीयाइं, विप्पइण्णाइँ कोट्ठए।
अहुणोवलित्तं ओल्लं, दट्ठूणं परिवज्जए।।21।।
एलगं दारगं साणं, वच्छगं वा वि कोट्ठए।
उल्लंघिया न पविसे, विऊहित्ताण व संजए।।22।।
असंसत्तं पलोएज्जा, नाइदूरावलोयए।
उप्फुल्लं न विणिज्झाए, नियट्टेज्ज अयंपुरो।।23।।
अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोयरग्गगओ मुणी।
कुलस्स भूमिं जाणित्ता, मियं भूमिं परक्कमे।।24।।
तत्थेव पडिलेहेज्जा, भूमिभागं वियक्खणो।
आसिणाणस्स वच्चस्स, संलोगं परिवज्जए।।25।।

दग-मट्टियआयाणे, बीयाणि हरियाणि य।
परिवज्जेंतो चिट्ठेज्जा, सव्विंदियसमाहिए।।26।।
तत्थ से चिट्ठमाणस्स, आहरे पाण-भोयणं।
अकप्पियं न इच्छेज्जा, पडिगाहेज्ज कप्पियं।।27।।
आहरंती सिया तत्थ, परिसाडेज्ज भोयणं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।28।।
सम्मद्दमाणी पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य।
असंजमकरिं नच्चा, तारिसं परिवज्जए।।29।।
साहट्टु निक्खिवित्ताणं, सच्चित्तं घट्टिऊण य।
तहेव समणट्ठाए, उदगं संपणोल्लिया।।30।।
आगाहइत्ता चलइत्ता, आहरे पाण-भोयणं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।31।।
पुरेकम्मेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।32।।
उदओल्लेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।33।।
ससिणिद्धेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।34।।

ससरक्खेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।35।।
मट्टियागतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।36।।
ऊसगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।37।।
हरितालगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।38।।
हिंगुलुयगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।39।।
मणोसिलागतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।40।।
अंजणगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।41।।
लोणगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।42।।
गेरुयगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।43।।

वण्णियगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।44।।
सेडियगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।45।।
सोरट्ठियगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।46।।
पिट्ठगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।47।।
कुक्कुसगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।48।।
उक्कुट्ठगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।49।।
असंसट्ठेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
दिज्जमाणं न इच्छेज्जा, पच्छाकम्मं जहिं भवे।।50।।
संसट्ठेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा, जं तत्थेसणियं भवे।।51।।
दोण्हं तु भुंजमाणाणं, एगो तत्थ निमंतए।
दिज्जमाणं न इच्छेज्जा, छंदं से पडिलेहए।।52।।

दोण्हं तु भुंजमाणाणं, दो वि तत्थ निमंतए।
दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा, जं तत्थेसणियं भवे।।53।।
गुव्विणीए उवन्नत्थं, विविहं पाण-भोयणं।
भुज्जमाणं विवज्जेज्जा ,भुत्तसेसं पडिच्छए।।54।।
सिया य समणट्ठाए, गुव्विणी कालमासिणी।
उट्ठिया वा निसीएज्जा, निसन्ना वा पुणुट्ठए।।55।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।56।।
थणगं पज्जेमाणी, दारगं वा कुमारियं।
तं निक्खिवित्तु रोयंतं, आहरे पाण-भोयणं।।57।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।58।।
जं भवे भत्त-पाणं तु, कप्पाऽकप्पम्मि संकियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।59।।
दगवारएण पिहियं, नीसाए पीढएण वा।
लोढेण वा वि लेवेण, सिलेसेण व केणई।।60।।
तं च उब्भिंदिया देज्जा, समणट्ठाएँ दायए।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।61।।

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा ,दाणट्ठा पगडं इमं।।62।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।63।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, पुण्णट्ठा पगडं इमं।।64।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।65।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, वणिमट्ठा पगडं इमं।।66।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।67।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, समणट्ठा पगडं इमं।।68।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।69।।
उद्देसियं कीयगडं, पूईकम्मं च आहडं।
अज्झोयर पामिच्चं, मीसजायं च वज्जए।।70।।

उग्गमं से पुच्छेज्जा, कस्सऽट्ठा? केण वा कडं?।
सोच्चा निस्संकियं सुद्धं, पडिगाहेज्ज संजए।।71।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
पुप्फेहिं होज्ज उम्मीसं, बीएहिं हरिएहिँ वा।।72।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।73।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
उदगम्मि होज्ज निक्खित्तं, उत्तिंग-पणगेसु वा।।74।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।75।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं, तं च संघट्टिया दए।।76।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।77।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं, तं च उस्सिक्किया दए।।78।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।79।।

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं , तं च ओसक्किया दए।।80।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।81।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं , तं च उज्जालिया दए।।82।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।83।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं, तं च पज्जालिया दए।।84।।
तं भवे भत्त-पाणं, तु संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।85।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं ,तं च निव्वाविया दए।।86।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।87।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं, तं च उस्सिंचिया दए।।88।।

तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।89।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं, तं च निस्सिंचिया दए।।90।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।91।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं, तं च ओवत्तिया दए।।92।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।93।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं ,तं च ओयारिया दए।।94।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।95।।
होज्ज कट्ठं सिलं वा वि, इट्टालं वा वि एगया।
ठवियं संकमट्ठाए, तं च होज्ज चलाचलं।।96।।
न तेण भिक्खू गच्छेज्जा, दिट्ठो तत्थ असंजमो।
गंभीरं झुसिरं चेव, सव्विंदियसमाहिए।।97।।

निस्सेणिं फलगं पीढं, उस्सवित्ताणमारुहे।
मंचं कीलं च पासायं, समणट्ठाए व दायगे।।98।।
दुरुहमाणे पवडेज्जा, हत्थं पायं व लूसए।
पुढविजीवे विहिंसेज्जा, जे य तन्निस्सिया जगा।।99।।
एयारिसे महादोसे, जाणिऊण महेसिणो।
तम्हा मालोहडं भिक्खं ,न पडिगेण्हंति संजया।।100।।
कंदं मूलं पलंबं वा, आमं छिन्नं च सन्निरं।
तुंबागं सिंगबेरं च, आमगं परिवज्जए।।101।।
तहेव सत्तुचुण्णाइं, कोलचुण्णाइँ आवणे।
सक्कुलिं फाणियं पूयं, अन्नं वा वि तहाविहं।।102।।
विक्कायमाणं पसढं, रएण परिघासियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।103।।
बहुअट्ठियं पोग्गलं, अणिमिसं वा बहुकंटयं।
अत्थियं तेंदुयं बिल्लं, उच्छुखंडं च सिंबलिं।।104।।
अप्पे सिया भोयणज्जाए, बहुउज्झियधम्मए।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।105।।
तहेवुच्चावयं पाणं, अदुवा वारधोवणं।
संसेइमं चाउलोदगं ,अहुणाधोयं विवज्जए।।106।।

जं जाणेज्ज चिराधोयं, मईए दंसणेण वा।
पडिपुच्छिऊण सोच्चा वा ,जं च निस्संकियं भवे।।107।।
अजीवं परिणयं नच्चा, पडिगाहेज्ज संजए।
अह संकियं भवेज्जा, आसाइत्ताण रोयए।।108।।
थोवमासायणट्ठाए, हत्थगम्मि दलाहि मे।
मा मे अच्चंबिलं पूइं, नालं तण्हं विणित्तए।।109।।
तं च अच्चंबिलं पूइं, नालं तण्हं विणित्तए।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।110।।
तं च होज्ज अकामेणं, विमणेण पडिच्छियं।
तं अप्पणा न पिबे, नो वि अन्नस्स दावए।।111।।
एगंतमवक्कमित्ता, अचित्तं पडिलेहिया।
जयं परिट्ठवेज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे।।112।।
सिया य गोयरग्गओ, इच्छेज्जा परिभोत्तुयं।
कोट्ठगं भित्तिमूलं वा, पडिलेहित्ताण फासुयं।।113।।
अणुन्नवेत्तु मेहावी, पडिच्छन्नम्मि संवुडे।
हत्थगं संपमज्जित्ता, तत्थ भुंजेज्ज संजए।।114।।
तत्थ से भुंजमाणस्स, अट्ठियं कंटओ सिया।
तण कट्ठ सक्करं वा वि ,अन्नं वा वि तहाविहं ।।115।।

तं उक्खिवित्तु न निखिवे, आसएण न छड्डुए।
हत्थेण तं गहेऊण, एगंतमवक्कमे।।116।।
एगंतमवक्कमित्ता, अच्चित्तं पडिलेहिया।
जयं परिट्ठवेज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे।।117।।
सिया य भिक्खु इच्छेज्जा, सेज्जमागम्म भोत्तुयं।
सपिंडपायमागम्म, उंडुयं पडिलेहिया।।118।।
विणएण पविसित्ता, सगासं गुरुणो मुणी।
इरियावहिय मायाय, आगओ य पडिक्कमे।।119।।
आभोएत्ताण निस्सेसं, अइयारं जहक्कमं।
गमणाऽऽगमणे चेव, भत्त-पाणे व संजए।।120।।
उज्जुप्पण्णो अणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेयसा।
आलोए गुरुसगासे, जं जहा गहियं भवे।।121।।
न सम्ममालोइयं होज्जा, पुव्विं पच्छा व जं कडं।
पुणो पडिक्कमे तस्स, वोसट्ठो चिंतए इमं।।122।।
अहो! जिणेहऽसावज्जा, वित्ती साहूण देसिया।
मोक्खसाहणहेउस्स, साहुदेहस्स धारणा।।123।।
नमोक्कारेण पारेत्ता, करेत्ता जिणसंथवं।
सज्झायं पट्ठवेत्ताणं, वीसमेज्ज खणं मुणी।।124।।

वीसमंतो इमं चिंते, हियमट्ठं लाभमट्ठिओ।
जइ मे अणुग्गहं कुज्जा, साहू! होज्जामि तारिओ ।।125।।
साहवो तो चियत्तेणं, निमंतेज्ज जहक्कमं।
जइ तत्थ केइ इच्छेज्जा, तेहिं सद्धिं तु भुंजए।।126।।
अह कोइ न इच्छेज्जा, तओ भुंजेज्ज एक्कओ।
आलोगभायणे साहू, जयं अपरिसाडियं।।127।।
तित्तगं व कडुयं व कसायं, अंबिलं व महुरं लवणं वा।
एय लद्धमन्नट्ठपउत्तं, महु-घयं व भुंजेज्ज संजए।।128।।
अरसं विरसं वा वि, सूइयं वा असूइयं।
ओल्लं वा जइ वा सुक्कं , मंथु-कुम्मासभोयणं।।129।।
उप्पन्नं नाइहीलेज्जा, अप्पं वा बहु फासुयं।
मुहालद्धं मुहाजीवी, भुंजेज्जा दोसवज्जियं।।130।।
दुल्लहा हु मुहादाई, मुहाजीवी वि दुल्लहा।
मुहादाई मुहाजीवी, दो वि गच्छंति सोग्गइं।।131।।

त्ति बेमि।।

।। पिंडेसणाए पढमो उद्देसओ समत्तो।।

पिंडेसणऽज्झयणे बीओ उद्देसओ

पडिग्गहं संलिहित्ताणं, लेवमायाएँ संजए।
दुगंधं वा सुगंधं वा, सव्वं भुंजे न छड्डए।।1।।
सेज्जा निसीहियाए, समावन्नो य गोयरे।
अयावयट्ठा भोच्चा णं, जइ तेण न संथरे।।2।।
तओ कारणमुप्पन्ने, भत्त-पाणं गवेसए।
विहिणा पुव्ववुत्तेण, इमेणं उत्तरेण य।।3।।
कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेणेव पडिक्कमे।
अकालं च विवज्जेत्ता, काले कालं समायरे।।4।।
अकाले चरसि भिक्खू!, कालं न पडिलेहसि।
अप्पाणं च किलामेसि, सन्निवेसं च गरहसि।।5।।
सइ काले चरे भिक्खू, कुज्जा पुरिसकारियं।
अलाभो त्ति न सोएज्जा, तवो त्ति अहियासए।।6।।
तहेवुच्चावया पाणा, भत्तट्ठाए समागया।
तो उज्जुयं न गच्छेज्जा, जयमेव परक्कमे।।7।।
गोयरग्गपविट्ठो उ, न निसीएज्ज कत्थई।
कहं च न पबंधेज्जा, चिट्ठित्ताण व संजए।।8।।

अग्गलं फलिहं दारं, कवाडं वा वि संजए।
अवलंबिया न चिट्ठेज्जा, गोयरग्गगओ मुणी।।9।।
समणं माहणं वा वि, किविणं वा वणीमगं।
उवसंकमंतं भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए।।10।।
तं अइक्कमित्तु न पविसे, न चिट्ठे चक्खुगोयरे।
एगंतमवक्कमित्ता, तत्थ चिट्ठेज्ज संजए।।11।।
वणीमगस्स वा तस्स, दायगस्सुभयस्स वा।
अप्पत्तियं सिया होज्जा, लहुत्तं पवयणस्स वा।।12।।
पडिसेहिए व दिन्ने वा, तओ तम्मि नियत्तिए।
उवसंकमेज्ज भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए।।13।।
उप्पलं पउमं वा वि, कुमुयं वा मगदंतियं।
अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं, तं च संलुंचिया दए।।14।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।15।।
उप्पलं पउमं वा वि, कुमुयं वा मगदंतियं।
अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं, तं च सम्मद्दिया दए।।16।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।17।।

सालुयं वा विरालियं, कुमुदुप्पलनालियं।
मुणालियं सासवनालियं ,उच्छुक्खंडं अनिव्वुडं।।18।।
तरुणगं वा पवालं, रुक्खस्स तणगस्स वा।
अन्नस्स वा वि हरियस्स, आमगं परिवज्जए।।19।।
तरुणियं वा छिवाडिं, आमियं भज्जियं सइं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।20।।
तहा कोलमणुस्सिन्नं, वेलुयं कासवनालियं।
तिलपप्पडगं नीमं, आमगं परिवज्जए।।21।।
तहेव चाउलं पिट्ठं, वियडं वा तत्तनिव्वुडं।
तिलपिट्ठपूइपिन्नागं, आमगं परिवज्जए।।22।।
कविट्ठं माउलिंगं च, मूलगं मूलगत्तियं।
आमं असत्थपरिणयं, मणसा वि न पत्थए।।23।।
तहेव फलमंथूणि, बीयमंथूणि जाणिया।
बिहेलगं पियालं च, आमगं परिवज्जए।।24।।
समुयाणं चरे भिक्खू, कुलं उच्चावयं सया।
नीयं कुलमइक्कम्म, ऊसढं नाभिधारए।।25।।
अदीणो वित्तिमेसेज्जा, न विसीएज्ज पंडिए।
अमुच्छिओ भोयणम्मि, मायन्ने एसणारए।।26।।

बहुं परघरे अत्थि, विविहं खाइम-साइमं।
न तत्थ पंडिओ कुप्पे, इच्छा देज्ज परो न वा।।27।।
सयणाऽऽसण वत्थं वा, भत्त-पाणं व संजए।
अदेंतस्स न कुप्पेज्जा, पच्चक्खे वि य दीसओ।।28।।
इत्थियं पुरिसं वा वि, डहरं वा महल्लगं।
वंदमाणो न जाएज्जा, नो य णं फरुसं वए।।29।।
जे न वंदे न से कुप्पे, वंदिओ न समुक्कसे।
एवमन्नेसमाणस्स, सामण्णमणुचिट्ठई।।30।।
सिया एगइओ लद्धुं, लोभेण विणिगूहई।
मा मेयं दाइयं संतं, दट्ठूणं सयमाइए।।31।।
अत्तट्ठगुरुओ लुद्धो, बहुं पावं पकुव्वई।
दुत्तोसओ य भवति, नेव्वाणं च न गच्छई।।32।।
सिया एगइओ लद्धुं, विविहं पाण-भोयणं।
भद्दगं भद्दगं भोच्चा, विवण्णं विरसमाहरे।।33।।
जाणंतु ता इमे समणा, आययट्ठी अयं मुणी।
संतुट्ठो सेवई पंतं, लूहवित्ती सुतोसओ।।34।।
पूयणट्ठी जसोकामी, माण-सम्माणकामए।
बहुं पसवई पावं, मायासल्लं च कुव्वई।।35।।

सुरं वा मेरगं वा वि, अन्नं वा मज्जगं रसं।
ससक्खं न पिबे भिक्खू, जसं सारक्खमप्पणो।।36।।
पियाएगइओ तेणो, न मे कोइ वियाणइ।
तस्स पस्सह दोसाइं, नियडिं च सुणेह मे।।37।।
वड्ढई सोंडिया तस्स, मायामोसं च भिक्खुणो।
अयसो य अणेव्वाणी, सययं च असाहुया।।38।।
निच्चुव्विग्गो जहा तेणो, अत्तकम्मेहि दुम्मई।
तारिसो मरणंते वि, नाऽऽराहेइ संवरं।।39।।
आयरिए नाऽऽराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं।।40।।
तवं कुव्वइ मेहावी, पणीयं वज्जए रसं।
मज्जप्पमायविरओ, तवस्सी अइउक्कसो।।41।।
तस्स पस्सह कल्लाणं, अणेगसाहुपूइयं।
विउलं अत्थसंजुत्तं, कित्तइस्सं सुणेह मे।।42।।
एवं तु गुणप्पेही, अगुणाणं विवज्जए।
तारिसो मरणंते वि, आराहेइ संवरं।।43।।
आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं।।44।।

तवतेणे वइतेणे, रूवतेणे य जे नरे।
आयार-भावतेणे य, कुव्वई देवकिब्बिसं।।45।।
लद्धूण वि देवत्तं, उववन्नो देवकिब्बिसे।
तत्थावि से न याणाइ, किं मे किच्चा इमं फलं?।।46।।
तत्तो वि से चइत्ताणं, लब्भिही एलमूयगं।
नरयं तिरिक्खजोणिं वा, बोही जत्थ सुदुल्लहा।।47।।
एयं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासियं।
अणुमायं पि मेहावी, मायामोसं विवज्जए ।।48।।
सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं, संजयाण बुद्धाण सगासे।
तत्थ भिक्खु सुप्पणिहिइंदिए, तिव्वलज्ज गुणवं विहरेज्जासि।।49।।

त्ति बेमि।।

।। पिंडेसणाए बीओ उद्देसओ समत्तो।।

।। पिंडेसणऽज्झयणं समत्तं।।

छट्ठं महल्लियायारकहऽज्झयणं

नाण-दंसणसंपन्नं, संजमे य तवे रयं।
गणिमागमसंपन्नं, उज्जाणम्मि समोसढं।।1।।
रायाणो रायमच्चा य, माहणा अदुव खत्तिया।
पुच्छंति निहुयऽप्पाणो, कहं भे आयारगोयरो?।।2।।
तेसिं सो निहुओ दंतो, सव्वभूयसुहावहो।
सिक्खाए सुसमाउत्तो, आइक्खइ वियक्खणो।।3।।
हंदि! धम्म-ऽत्थ-कामाणं, निग्गंथाणं सुणेह मे।
आयार-गोयरं भीमं, सयलं दुरहिट्ठयं।।4।।
नऽन्नत्थ एरिसं वुत्तं, जं लोए परमदुच्चरं।
विउलट्ठाणभाइस्स, न भूयं न भविस्सई।।5।।
सखुड्डग-वियत्ताणं, वाहियाणं च जे गुणा।
अखंड-फुल्ला कायव्वा, तं सुणेह जहा तहा।।6।।
दस अट्ठ य ठाणाइं, जाइं बालोऽवरज्झई।
तत्थ अन्नयरे ठाणे, निग्गंथत्ताओ भस्सई।।7।।
तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसियं।
अहिंसा निउणा दिट्ठा, सव्वभूएसु संजमो।।8।।

जावंति लोए पाणा, तसा अदुव थावरा।
ते जाणमजाणं वा, न हणे नो वि घायए।।9।।
सव्वजीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं।
तम्हा पाणवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं।।10।।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा, कोहा वा जइ वा भया।
हिंसगं न मुसं बूया, नो वि अन्नं वयावए।।11।।
मुसावाओ य लोगम्मि, सव्वसाहूहिं गरहिओ।
अविस्सासो य भूयाणं, तम्हा मोसं विवज्जए।।12।।
चित्तमंतमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं।
दंतसोहणमेत्तं पि, ओग्गहं सि अजाइया।।13।।
तं अप्पणा न गेण्हंति, नो वि गेण्हावए परं।
अन्नं वा गेण्हमाणं पि, नाणुजाणंति संजया।।14।।
अबंभचरियं घोरं, पमायं दुरहिट्ठियं।
नाऽऽयरंति मुणी लोए, भेयाययणवज्जिणो।।15।।
मूलमेयमहम्मस्स, महादोससमुस्सयं।
तम्हा मेहुणसंसग्गिं, निग्गंथा वज्जयंति णं।।16।।
विडमुब्भेइमं लोणं, तेल्लं सप्पिं च फाणियं।
न ते सन्निहिमिच्छंति, नायपुत्तवओरया।।17।।

लोभस्सेसो अणुफासो, मन्ने अन्नयरामवि।
जे सिया सन्निहीकामी, गिही पव्वइए न से।।18।।
जं पि वत्थं व पायं वा, कंबलं पायपुंछणं।
तं पि संजम-लज्जट्ठा, धारेंति परिहरेंति य।।19।।
न सो परिग्गहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो, इइ वुत्तं महेसिणा।।20।।
सव्वत्थुवहिणा बुद्धा, सारक्खणपरिग्गहे।
अवि अप्पणो वि देहम्मि, नाऽऽयरंति ममाइयं।।21।।
अहो! निच्चं तवोकम्मं, सव्वबुद्धेहि वण्णियं।
जा य लज्जासमा वित्ती, एगभत्तं च भोयणं।।22।।
संतिमे सुहुमा पाणा, तसा अदुव थावरा।
जाइं राओ अपासंतो, कहमेसणियं चरे?।।23।।
उदओल्लं बीयसंसत्तं, पाणा निव्वडिया महिं।
दिया ताइं विवज्जेज्जा, राओ तत्थ कहं चरे?।।24।।
एयं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासियं।
सव्वाहारं न भुंजंति, निग्गंथा राइभोयणं।।25।।
पुढविकायं न हिंसंति, मणसा वयस कायसा।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया।।26।।

पुढविकायं विहिंसंतो, हिंसई उ तदस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे।।27।।
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दोग्गइवड्ढणं।
पुढविकायसमारंभं, जावज्जीवाएँ वज्जए।।28।।
आउकायं न हिसंति, मणसा वयस कायसा।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया।।29।।
आउकायं विहिंसंतो, हिंसई उ तदस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे।।30।।
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दोग्गइवड्ढणं।
आउकायसमारंभं, जावज्जीवाएँ वज्जए।।31।।
जायतेयं न इच्छंति, पावगं जलइत्तए।
तिक्खमन्नयरं सत्थं, सव्वओ वि दुरासयं।।32।।
पाईणं पडिणं वा वि, उड्ढं अणुदिसामवि।
अहे दाहिणओ वा वि, दहे उत्तरओ वि य।।33।।
भूयाणं एसमाघाओ, हव्ववाहो न संसओ।
तं पईव-पयावट्ठा, संजया किंचि नाऽऽरभे।।34।।
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दोग्गइवड्ढणं।
तेउकायसमारंभं, जावज्जीवाएँ वज्जए।।35।।

अनिलस्स समारंभं, बुद्धा मन्नंति तारिसं।
सावज्जबहुलं चेयं, नेयं ताईहि सेवियं।।36।।
तालियंटेण पत्तेण, साहाविहुवणेण वा।
न ते वीइउमिच्छंति, वीयावेऊण वा परं।।37।।
जं पि वत्थं व पायं वा, कंबलं पायपुंछणं।
न ते वायमुईरंति, जयं परिहरंति य।।38।।
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दोग्गइवड्ढणं।
वाउकायसमारंभं, जावज्जीवाएँ वज्जए।।39।।
वणस्सइं न हिंसंति, मणसा वयस कायसा।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया।।40।।
वणस्सइं विहिंसंतो, हिंसई उ तदस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे।।41।।
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दोग्गइवड्ढणं।
वणस्सइसमारंभं, जावज्जीवाएँ वज्जए।।42।।
तसकायं न हिंसंति, मणसा वयस कायसा।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया।।43।।
तसकायं विहिंसंतो, हिंसई उ तदस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे।।44।।

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दोग्गइवड्ढणं।
तसकायसमारंभं, जावज्जीवाएँ वज्जए।।45।।
जाइं चत्तारिऽभोज्जाइं, इसिणाऽऽहारमाइणि।
ताइं तु विवज्जेंतो, संजमं अणुपालए।।46।।
पिंडं सेज्जं च वत्थं च, चउत्थं पायमेव य।
अकप्पियं न इच्छेज्जा, पडिग्गाहेज्ज कप्पियं।।47।।
जे नियागं ममायंति, कीयमुद्देसियाऽऽहडं।
वहं ते अणुजाणंति, इइ वुत्तं महेसिणा।।48।।
तम्हा असण-पाणाई, कीयमुद्देसियाऽऽहडं।
वज्जयंति ठियप्पाणो, निग्गंथा धम्मजीविणो।।49।।
कंसेसु कंसपाएसु, कुंडमोएसु वा पुणो।
भुंजंतो असण-पाणाई, आयारा परिभस्सई।।50।।
सीओदगसमारंभे, मत्तधोवणछड्डणे।
जाइं छण्णंति भूयाइं, दिट्ठो तत्थ असंजमो।।51।।
पच्छाकम्मं पुरेकम्मं, सिया तत्थ न कप्पई।
एयमट्ठं न भुंजंति, निग्गंथा गिहिभायणे।।52।।
आसंदी-पलियंकेसु, मंच-मासालएसु वा।
अणायरियमज्जाणं, आसइत्तु सइत्तु वा।।53।।

नाऽऽसंदी-पलियंकेसु, न निसेज्जा न पीढए।
निग्गंथाऽपडिलेहाए, बुद्धवुत्तमहिट्ठगा।।54।।
गंभीरविजया एए, पाणा दुप्पडिलेहगा।
आसंदी पलियंका य, एयमट्ठं विवज्जिया।।55।।
गोयरग्गपविट्ठस्स, निसेज्जा जस्स कप्पई।
इमेरिसमणायारं, आवज्जइ अबोहियं।।56।।
विवत्ती बंभचेरस्स, पाणाणं अवहे वहो।
वणीमगपडिग्घाओ, पडिकोहो अगारिणं।।57।।
अगुत्ती बंभचेरस्स, इत्थीओ यावि संकणं।
कुसीलवड्ढणं ठाणं, दूरओ परिवज्जए।।58।।
तिण्हमन्नयरागस्स, निसेज्जा जस्स कप्पई।
जराए अभिभूयस्स, वाहियस्स तवस्सिणो।।59।।
वाहिओ वा अरोगी वा, सिणाणं जो उ पत्थए।
वोक्कंतो होइ आयारो, जढो हवइ संजमो।।60।।
संतिमे सुहुमा पाणा, घसासु भिलुगासु य।
जे उ भिक्खू सिणायंतो, वियडेणुप्पिलावए।।61।।
तम्हा ते न सिणायंति, सीएण उसिणेण वा।
जावज्जीवं वयं घोरं, असिणाणमहिट्ठगा।।62।।

सिणाणं अदुवा कक्कं, लोद्धं पउमगाणि य।
गायस्सुव्वट्टणट्ठाए, नाऽऽयरंति कयाइ वि।।63।।
निगिणस्स वा वि मुंडस्स, दीहरोम-नहंसिणो।
मेहुणा उवसंतस्स, किं विभूसाएँ कारियं?।।64।।
विभूसावत्तियं भिक्खू, कम्मं बंधइ चिक्कणं।
संसारसायरे घोरे, जेणं भमति दुरुत्तरे।।65।।
विभूसावत्तियं चेयं, बुद्धा मन्नंति तारिसं।
सावज्जबहुलं चेयं, नेयं ताईहि सेवियं।।66।।
खवेंति अप्पाणममोहदंसिणो, तवे रया संजम अज्जवे गुणे।
धुणंति पावाइं पुरेकडाइं, नवाइं पावाइं न ते करेंति।।67।।
सओवसंता अममा अकिंचणा, सविज्जविज्जाणुगया जसंसिणो।
उउप्पसन्ने विमले व चंदिमा, सिद्धिं विमाणाइँ व जंति ताइणो।।68।।
त्ति बेमि।।

।। छट्ठं महल्लियायारकहऽज्झयणं समत्तं ।।

सत्तमं वक्कसुद्धिअज्झयणं

चउण्हं खलु भासाणं, परिसंखाय पन्नवं।
दोण्हं तु विजयं सिक्खे, दो न भासेज्ज सव्वसो।।1।।
जा य सच्चा अवत्तव्वा, सच्चामोसा य जा मुसा।
जा य बुद्धेहिऽणाइन्ना, न तं भासेज्ज पण्णवं।।2।।
असच्चमोसं सच्चं च, अणवज्जमकक्कसं।
समुप्पेहितऽसंदिद्धं, गिरं भासेज्ज पण्णवं।।3।।
एयं च अट्ठमन्नं वा, जं तु नामेइ सासयं।
स भासं सच्चमोसं पि, तं पि धीरो विवज्जए।।4।।
वितहं पि तहामुत्तिं, जं गिरं भासए नरो।
तम्हा सो पुट्ठो पावेणं, किं पुण जो मुसं वए?।।5।।
तम्हा गच्छामो वक्खामो, अमुगं वा णे भविस्सई।
अहं वा णं करिस्सामि, एसो वा णं करिस्सई।।6।।
एवमाई उ जा भासा, एसकालम्मि संकिया।
संपयाईयमट्ठे वा, तं पि धीरो विवज्जए।।7।।
अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्ने अणागए।
जमट्ठं तु न जाणेज्जा, 'एवमेयं' ति नो वए।।8।।

अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्ने अणागए।
जत्थ संका भवे तं तु ,'एवमेयं' ति नो वए।।9।।
अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्ने अणागए।
निस्संकियं भवे जं तु, 'एवमेयं' ति निद्दिसे।।10।।
तहेव फरुसा भासा, गुरुभूओवघाइणी।
सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो।।11।।
तहेव काणं 'काणे' त्ति, पंडगं 'पंडगे' त्ति वा।
वाहियं वा वि 'रोगि' त्ति, तेणं 'चोरे' त्ति नो वए।।12।।
एएणऽन्नेण वट्ठेण, परो जेणुवहम्मई।
आयारभावदोसण्णू, ण तं भासेज्ज पण्णवं।।13।।
तहेव 'होले' 'गोले' त्ति, 'साणे' वा 'वसुले' त्ति य।
'दमए' 'दूहए' वा वि, नेवं भासेज्ज पण्णवं।।14।।
अज्जिए पज्जिए वा वि, अम्मो माउसिय त्ति वा।
पिउस्सिए भाइणेज्ज त्ति, धूए नत्तुणिए त्ति य।।15।।
हले हले त्ति अन्ने त्ति, भट्टे सामिणि गोमिणि।
होले गोले वसुले त्ति, इत्थियं नेवमालवे।।16।।
नामधेज्जेण णं बूया, इत्थीगोत्तेण वा पुणो।
जहारिहमभिगिज्झ, आलवेज्ज लवेज्ज वा।।17।।

अज्जए पज्जए वा वि, बप्पो चुल्लपिउ त्ति य।
माउला भाइणेज्ज त्ति, पुत्ता णत्तुणिय त्ति य।।18।।
हे भो हले त्ति अन्ने त्ति, भट्टा सामिय गोमिय।
होल गोल वसुल त्ति, पुरिसं नेवमालवे।।19।।
नामधेज्जेण णं बूया, पुरिसगोत्तेण वा पुणो।
जहारिहमभिगिज्झ, आलवेज्ज लवेज्ज वा।।20।।
पंचिंदियाण पाणाणं, एस इत्थी अयं पुमं।
जाव णं न विजाणेज्जा, ताव जाइ त्ति आलवे।।21।।
तहेव मणुस्सं पसुं, पक्खिं वा वि सिरीसिवं।
थूले पमेइले वज्झे, पाइमे त्ति य नो वए।।22।।
परिवूढे त्ति णं बूया, बूया उवचिए त्ति य।
संजाए पीणिए वा वि, महाकाए त्ति आलवे।।23।।
तहेव गाओ दोज्झाओ, दम्मा गोरहग त्ति य।
वाहिमा रहजोग्ग त्ति, नेवं भासेज्ज पण्णवं।।24।।
जुवंगवे त्ति णं बूया, धेणुं रसदय त्ति य।
रहस्से महव्वए वा वि, वए संवहणे त्ति य।।25।।
तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि य।
रुक्खा महल्ल पेहाए, नेवं भासेज्ज पण्णवं।।26।।

अलं पासायखंभाणं, तोरणाण गिहाण य।
फलिह-ऽग्गल-नावाणं, अलं उदगदोणिणं।।27।।
पीढए चंगबेरे य, नंगलं मइयं सिया।
जंतलट्ठी व नाभी वा, गंडिया व अलं सिया।।28।।
आसणं सयणं जाणं, होज्जा वा किंचुवस्सए।
भूओवघाइणिं भासं, नेवं भासेज्ज पण्णवं।।29।।
तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि य।
रुक्खा महल्ल पेहाए, एवं भासेज्ज पण्णवं।।30।।
जाइमंता इमे रुक्खा, दीहवट्टा महालया।
पयायसाला विडिमा, वए दरिसणि त्ति य।।31।।
तहा फलाइं पक्काइं, पायखज्जाइं नो वए।
वेलोइयाइं टालाइं, वेहिमाइं ति नो वए।।32।।
असंथडा इमे अंबा, बहुनिव्वट्टिमाफला।
वएज्ज बहुसंभूया, भूयरूव त्ति वा पुणो।।33।।
तहोसहीओ पक्काओ, नीलियाओ छवी ति य।
लाइमा भज्जिमाओ त्ति, पिहुखज्ज त्ति नो वए।।34।।
रूढा बहुसंभूया, थिरा ऊसढा ति य।
गब्भियाओ पसूयाओ, ससाराओ त्ति आलवे।।35।।

तहेव संखडिं नच्चा, किच्चं कज्जं ति नो वए।
तेणगं वा वि वज्झे त्ति, सुतित्थे त्ति य आवगा।।36।।
संखडिं संखडिं बूया, पणियट्ठे त्ति तेणगं।
बहुसमाणि तित्थाणि, आवगाणं वियागरे।।37।।
तहा नईओ पुण्णाओ, कायपेज्ज त्ति नो वए।
नावाहिं तारिमाओ त्ति, पाणिपेज्ज त्ति नो वए।।38।।
बहुवाहडा अगाहा, बहुसलिलुप्पिलोदगा।
बहुवित्थडोदगा यावि, एवं भासेज्ज पण्णवं।।39।।
तहेव सावज्जं जोगं, परस्सऽट्ठाएँ निट्ठियं।
कीरमाणं ति वा णच्चा, सावज्जं न लवे मुणी।।40।।
सुकडे त्ति सुपक्के त्ति, सुछिन्ने सुहडे मडे।
सुनिट्ठिए सुलट्ठे त्ति, सावज्जं वज्जए मुणी।।41।।
पयत्तपक्के त्ति व पक्कमालवे, पयत्तछिन्ने त्ति व छिन्नमालवे।
पयत्तलट्ठे त्ति व कम्महेउयं, गाढप्पहारं ति व गाढमालवे।।42।।
सव्वुक्कस्सं परग्घं वा, अउलं नत्थि एरिसं।
अचक्कियमवत्तव्वं, अचिंतं चेव णो वए।।43।।
सव्वमेयं वइस्सामि, सव्वमेयं ति नो वए।
अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ, एवं भासेज्ज पण्णवं।।44।।

सुक्कीयं वा सुविक्कीयं, अकेज्जं केज्जमेव वा।
इमं गेण्ह इमं मुंच, पणियं नो वियागरे।।45।।
अप्पग्घे वा महग्घे वा, कए व विक्कए वि वा।
पणियट्ठे समुप्पन्ने, अणवज्जं वियागरे।।46।।
तहेवाऽसंजयं धीरो, आस एहि करेहि वा।
सय चिट्ठ वयाहि त्ति, नेवं भासेज्ज पण्णवं।।47।।
बहवे इमे असाहू, लोए वुच्चंति साहुणो।
न लवे असाहुं साहु त्ति, साहुं साहु त्ति आलवे।।48।।
णाण-दंसणसंपन्नं, संजमे य तवे रयं।
एवंगुणसमाउत्तं, संजयं साहुमालवे।।49।।
देवाणं मणुयाणं च, तिरियाणं च वुग्गहे।
अमुयाण जओ होउ, मा वा होउ त्ति नो वए।।50।।
वाओ वुट्ठं व सीउण्हं, खेमं धायं सिवं ति वा।
कया णु होज्ज एयाणि?, मा वा होउ त्ति नो वए।।51।।
तहेव मेहं व नहं व माणवं, न देव देव त्ति गिरं वएज्जा।
सम्मुच्छिए उन्नए वा पओदे, वएज्ज वा 'वुट्ठे बलाहए' त्ति।।52।।
'अंतलिक्खे' त्ति णं बूया, 'गुज्झाणुचरियं' ति य।
रिद्धिमंतं नरं दिस्स, 'रिद्धिमंतं' ति आलवे।।53।।

तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा,
ओहारिणी जा य परोवघाइणी।
से कोह लोह भयसा व माणवा!,
न हासमाणो वि गिरं वएज्जा।।54।।
स-वक्कसुद्धिं समुपेहिया मुणी,
गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया।
मियं अदुट्ठं अणुवीइ भासए,
सयाण मज्झे लहई पसंसणं।।55।।
भासाएँ दोसे य गुणे य जाणिया,
तीसे य दुट्ठाएँ विवज्जए सया।
छसु संजए सामणिए सया जए,
वएज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं।।56।।
परिक्खभासी सुसमाहिइंदिए,
चउक्कसायावगए अणिस्सिए।
स निद्धुणे धुण्णमलं पुरेकडं,
आराहए लोगमिणं तहा परं।।57।।
ति बेमि।।

।। सत्तमं वक्कसुद्धिअज्झयणं समत्तं ।।

अट्ठमं आयारप्पणिहिअज्झयणं

आयारप्पणिहिं लद्धुं , जहा कायव्व भिक्खुणा।
तं भे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे।।1।।
पुढवि दग अगणि वाऊ, तण रुक्ख सबीयगा।
तसा य पाणा जीव त्ति, इइ वुत्तं महेसिणा।।2।।
तेसिं अच्छणजोएण, निच्चं होयव्वयं सिया।
मणसा काय वक्केणं, एवं भवइ संजए।।3।।
पुढविं भित्तिं सिलं लेलुं, नेव भिंदे न संलिहे।
तिविहेण करणजोएण, संजए सुसमाहिए।।4।।
सुद्धपुढवीए न निसिए, ससरक्खम्मि आसणे।
पमज्जित्तु निसीएज्जा, जाणित्तु जाइयोग्गहं।।5।।
सीओदगं न सेवेज्जा, सिला वुट्ठं हिमाणि य।
उसिणोदगं तत्तफासुयं, पडिगाहेज्ज संजए।।6।।
उदओल्लं अप्पणो कायं, नेव पुंछे न संलिहे।
समुप्पेह तहाभूयं, नो णं संघट्टए मुणी।।7।।
इंगालं अगणिं अच्चिं, अलायं वा सजोइयं।
न उंजेज्जा न घट्टेज्जा, नो णं निव्वावए मुणी।।8।।

तालियंटेण पत्तेण, साहाविहुवणेण वा।
न वीएज्जऽप्पणो कायं, बाहिरं वा वि पोग्गलं।।9।।
तण-रुक्खं न छिंदेज्जा, फलं मूलं व कस्सइ।
आमगं विविहं बीयं, मणसा वि न पत्थए।।10।।
गहणेसु न चिट्ठेज्जा, बीएसु हरिएसु वा।
उदगम्मि तहा निच्चं, उत्तिंग-पणगेसु वा।।11।।
तसे पाणे न हिंसेज्जा, वाया अदुव कम्मुणा।
उवरओ सव्वभूएसु, पासेज्ज विविहं जगं।।12।।
अट्ठ सुहुमाइँ पेहाए, जाइं जाणित्तु संजए।
दयाहिगारी भूएसु, आस चिट्ठ सएहि वा।।13।।
कयराइं अट्ठ सुहुमाइं?, जाइं पुच्छेज्ज संजए।
इमाइं ताइँ मेहावी, आइक्खेज्ज वियक्खणे।।14।।
सिणेहं[1] पुप्फसुहुमं[2] च, पाणुत्तिंगं[3-4] तहेव य।
पणगं[5] बीय[6] हरियं[7] च, अंडसुहुमं[8] च अट्ठमं।।15।।
एवमेयाणि जाणित्ता, सव्वभावेण संजए।
अप्पमत्ते जए निच्चं, सव्विंदियसमाहिए।।16।।
धुवं च पडिलेहेज्जा, जोगसा पाय-कंबलं।
सेज्जमुच्चारभूमिं च, संथारं अदुवाऽऽसणं।।17।।

उच्चारं पासवणं, खेलं सिंघाण जल्लियं।
फासुयं पडिलेहित्ता, परिट्ठावेज्ज संजए।।18।।
पविसित्तु परागारं, पाणट्ठा भोयणस्स वा।
जयं चिट्ठे मियं भासे, णो रूवेसु मणं करे।।19।।
बहुं सुणेइ कण्णेहिं, बहुं अच्छीहिं पेच्छइ।
न य दिट्ठं सुयं सव्वं, भिक्खू अक्खाउमरिहइ।।20।।
सुयं वा जइ वा दिट्ठं, न लवेज्जोवघाइयं।
न य केणइ उवाएणं, गिहिजोगं समायरे।।21।।
निट्ठाणं रसनिज्जूढं, भद्दगं पावगं ति वा।
पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा, लाभालाभं न निद्दिसे।।22।।
न य भोयणम्मि गिद्धो, चरे उंछं अयंपुरो।
अफासुयं न भुंजेज्जा, कीयमुद्देसियाऽऽहडं।।23।।
सन्निहिं च न कुव्वेज्जा, अणुमायं पि संजए।
मुहाजीवी असंबद्धे, हवेज्ज जगनिस्सिए।।24।।
लूहवित्ती सुसंतुट्ठे, अप्पिच्छे सुभरे सिया।
आसुरत्तं न गच्छेज्जा, सोच्चाणं जिणसासणं।।25।।
कण्णसोक्खेहिँ सद्देहिं, पेमं नाभिनिवेसए।
दारुणं कक्कसं फासं, काएण अहियासए।।26।।

खुहं पिवासं दुस्सेज्जं, सीउण्हं अरईभयं।
अहियासे अव्वहिओ, देहे दुक्खं महाफलं।।27।।
अत्थंगयम्मि आइच्चे, पुरत्था य अणुग्गए।
आहारमइयं सव्वं, मणसा वि न पत्थए।।28।।
अतिंतिणे अचवले, अप्पभासी मियासणे।
हवेज्ज उयरे दंते, थोवं लद्धुं न खिंसए।।29।।
न बाहिरं परिभवे, अत्ताणं न समुक्कसे।
सुतेण लाभेण लज्जाए, जच्चा तवस बुद्धिए।।30।।
से जाणमजाणं वा, कट्टु आहम्मियं पयं।
संवरे खिप्पमप्पाणं, बीयं तं न समायरे।।31।।
अणायारं परक्कम्म, नेव गूहे न निण्हवे।
सुई सया वियडभावे, असंसत्ते जिइंदिए।।32।।
अमोहं वयणं कुज्जा, आयरियाणं महप्पणो।
तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए।।33।।
अधुवं जीवियं नच्चा, सिद्धिमग्गं वियाणिया।
विणियट्टेज्ज भोगेसु, आउं परिमियमप्पणो।।34।।
जरा जाव न पीलेई, वाही जाव न वड्ढई।
जीविंदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे।।35।।

कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाववड्ढणं।
वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छंतो हियमप्पणो।।36।।
कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।37।।
उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे।
मायं चऽज्जवभावेण, लोभं संतुट्ठिए जिणे।।38।।
कोहो य माणो य अणिग्गिहीया, माया य लोभो य विवड्ढमाणा।
चत्तारि एए कसिणा कसाया, सिंचंति मूलाइँ पुणब्भवस्स।।39।।
राइणिएसु विणयं पउंजे, धुवसीलयं सययं न हावएज्जा।
कुम्मे व्व अल्लीण-पलीणगुत्ते, परक्कमेज्जा तव-संजमम्मि।।40।।
निद्दं च न बहुमन्नेज्जा, संपहासं विवज्जए।
मिहोकहाहिं न रमे, सज्झायम्मि रओ सया।।41।।
जोगं च समणधम्मम्मि, जुंजे अणलसो धुवं।
जुत्तो य समणधम्मम्मि, अट्ठं लहइ अणुत्तरं।।42।।
इहलोग-पारत्तहियं, जेणं गच्छइ सोग्गइं।
बहुस्सुयं पज्जुवासेज्जा, पुच्छेज्जऽत्थविणिच्छयं।।43।।
हत्थं पायं च कायं च, पणिहाय जिइंदिए।
अल्लीणगुत्तो निसिए, सगासे गुरुणो मुणी।।44।।

न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ।
न य ऊरुं समासज्ज, चिट्ठेज्जा गुरुणंतिए।।45।।
अपुच्छिओ न भासेज्जा, भासमाणस्स वंतरा।
पिट्ठिमंसं न खाएज्जा, मायामोसं विवज्जए।।46।।
अप्पत्तियं जेण सिया, आसु कुप्पेज्ज वा परो।
सव्वसो तं न भासेज्जा, भासं अहियगामिणिं।।47।।
दिट्ठं मियं असंदिद्धं, पडिपुण्णं वियं जियं।
अयंपुर-मणुव्विग्गं, भासं निसिरेॅ अत्तवं।।48।।
आयारपण्णत्तिधरं, दिट्ठिवायमहिज्जगं।
वइविक्खलियं णच्चा, न तं उवहसे मुणी।।49।।
नक्खत्तं सुमिणं जोगं, निमित्तं मंत भेसजं।
गेहीण तं न आइक्खे, भूयाहिगरणं पयं।।50।।
अन्नट्ठं पगडं लेणं, भएज्ज सयणा-ऽऽसणं।
उच्चारभूमिसंपन्नं, इत्थी-पसुविवज्जियं।।51।।
विवित्ता य भवे सेज्जा, नारीणं न कहे कहं।
गिहिसंथवं न कुज्जा, कुज्जा साहूहि संथवं।।52।।
जहा कुक्कुडपोयस्स, निच्चं कुलओ भयं।
एवं खु बंभयारिस्स, इत्थीविग्गहओ भयं।।53।।

चित्तभित्तिं न निज्झाए, नारिं वा सुअलंकियं।
भक्खरं पिव दट्ठूणं, दिट्ठिं पडिसमाहरे।।54।।
हत्थ-पायपलिच्छिन्नं, कण्ण-नासविगप्पियं।
अवि वाससइं नारिं, बंभयारी विवज्जए।।55।।
विभूसा इत्थिसंसग्गी, पणीयरसभोयणं।
नरस्सऽत्तगवेसिस्स, विसं तालउडं जहा।।56।।
अंग-पच्चंगसंठाणं, चारुल्लविय-पेहियं।
इत्थीणं तं न निज्झाए, कामरागविवड्ढणं।।57।।
विसएसु मणुण्णेसुं, पेमं नाभिनिवेसए।
अणिच्चं तेसि विण्णाय, परिणामं पोग्गलाण उ।।58।।
पोग्गलाण परीणामं, तेसिं णच्चा जहा तहा।
विणीयतण्होॅ विहरे, सीईभूएण अप्पणा।।59।।
जाए सद्धाएॅ निक्खंतो, परियायट्ठाणमुत्तमं।
तमेव अणुपालेज्जा, गुणे आयरियसम्मए।।60।।
तवं चिमं संजमजोगयं च, सज्झायजोगं च सया अहिट्ठए।
सूरे व सेणाएॅ समत्तमाउहे, अलमप्पणो होइ अलं परेसिं।।61।।
सज्झाय-सज्झाणरयस्स ताइणो, अपावभावस्स तवे रयस्स।
विसुज्झई जं सेॅ मलं पुरेकडं, समीरियं रुप्पमलं व जोइणा।।62।।

से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए, सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे।
विरायई कम्मघणम्मि अवगए, कसिणऽब्भपुडावगमे व चंदिम।।63।।
त्ति बेमि।।

।।अट्ठमं आयारप्पणिहिअज्झयणं समत्तं।।

नवमं विणयसमाहिअज्झयणं

पढमो उद्देसओ

थंभा व कोहा व मय-प्पमाया, गुरुस्सगासे विणयं न सिक्खे।
सो चेव ऊ तस्स अभूइभावो, फलं व कीयस्स वहाय होइ।।1।।
जे यावि मंदे त्ति गुरुं विइत्ता, डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा।
हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा, करेंति आसायण ते गुरूणं।।2।।
पगईऍ मंदा वि भवंति एगे, डहरा वि य जे सुय-बुद्धोववेया।
आयारमंता गुण-सुट्ठियप्पा, जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा।।3।।
जे यावि नागं डहरे त्ति नच्चा, आसायए से अहियाय होइ।
एवाऽऽयरियं पि हु हीलयंतो, नियच्छई जाइपहं खु मंदे।।4।।
आसीविसो यावि परं सुरुट्ठो, किं जीयनासाओ परं नु कुज्जा?।
आयरियपाया पुण अप्पसन्ना, अबोहि आसायण नत्थि मोक्खो।।5।।

जो पावगं जलियमवक्कमेज्जा, आसीविसं वा वि हु कोवएज्जा।
जो वा विसं खायइ जीवियट्ठी, एसोवमाऽऽसायणया गुरूणं।।6।।
सिया हु से पावय नो डहेज्जा, आसीविसो वा कुविओ न भक्खे।
सिया विसं हालहलं न मारे, न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए।।7।।
जो पव्वयं सिरसा भेत्तुमिच्छे, सुत्तं व सीहं पडिबोहएज्जा।
जो वा दए सत्तिअग्गे पहारं, एसोवमाऽऽसायणया गुरूणं।।8।।
सिया हु सीसेण गिरिं पि भिंदे, सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे।
सिया न भिंदेज्ज व सत्तिअग्गं, न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए।।9।।
आयरियपाया पुण अप्पसन्ना, अबोहि आसायण नत्थि मोक्खो।
तम्हा अणाबाहसुहाभिकंखी, गुरुप्पसायाभिमुहो रमेज्जा।।10।।
जहाऽऽहियग्गी जलणं नमंसे, नाणाहुईमंतपयाभिसित्तं।
एवाऽऽयरियं उवचिट्ठएज्जा, अणंतणाणोवगओ वि संतो।।11।।
जस्संतिए धम्मपयाइँ सिक्खे, तस्संतिए वेणइयं पउंजे।
सक्कारए सिरसा पंजलीओ, काय ग्गिरा भो! मणसा य निच्चं।।12।।
लज्जा दया संजम बंभचेरं, कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं।
जे मे गुरू सययमणुसासयंति, ते हं गुरू सययं पूययामि।।13।।
जहा निसंते तवतऽच्चिमाली, पभासई भारह केवलं तु।
एवाऽऽयरिओ सुय-सील-बुद्धिए, विरायई सुरमज्झे व इंदो।।14।।

जहा ससी कोमुइजोगजुत्ते, नक्खत्त-तारागणपरिवुडप्पा।
खे सोहई विमले अब्भमुक्के, एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्झे।।15।।
महागरा आयरिया महेसी, समाहिजोगाण सुय-सील-बुद्धिए।
संपाविउकामे अणुत्तराइं, उवट्ठिओ तोसएँ धम्मकामी।।16।।
सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं, सुस्सूसए आयरिएऽप्पमत्तो।
आराहइत्ताण गुणे अणेगे, से पावई सिद्धिमणुत्तरं।।17।।
ति बेमि।।

।। विणयसमाहीए पढमो उद्देसओ समत्तो।।

[विणयसमाहीए बीओ उद्देसओ]

मूलाओं खंधप्पभवो दुमस्स, खंधाओं पच्छा समुवेंति साला।
साह प्पसाहा विरुहंति पत्ता, तओ सें पुप्फं च फलं रसो य।।1।।
एवं-धम्मस्स विणओ, मूलं परमो से मोक्खो।
जेण कित्तिं सुयं सग्घं, निस्सेसमधिगच्छई।।2।।
जे य चंडे मिए थद्धे, दुव्वाई नियडीसढे।
वुज्झई से अविणीयप्पा, कट्ठं सोयगयं जहा।।3।।
विणयं पि जो उवाएण, चोइओ कुप्पई नरो।
दिव्वं सो सिरिमेज्जंतिं, दंडेण पडिसेहए।।4।।

तहेव अविणीयप्पा, उववज्झा हया गया।
दीसंति दुहमेहंता, आभिओगमुवट्ठिया।।5।।
तहेव सुविणीयप्पा, उववज्झा हया गया।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महाजसा।।6।।
तहेव अविणीयप्पा, लोगंसि नर-नारिओ।
दीसंति दुहमेहंता, छाया विगलितिंदिया।।7।।
दंड-सत्थपरिजुण्णा, असब्भवयणेहि य।
कलुणा विवन्नछंदा, खुप्पिवासाएँ परिगया।।8।।
तहेव सुविणीयप्पा, लोगंसि नर-नारिओ।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महाजसा।।9।।
तहेव अविणीयप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा।
दीसंति दुहमेहंता, आभिओगमुवट्ठिया।।10।।
तहेव सुविणीयप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महाजसा।।11।।
जे आयरिय-उवज्झायाणं, सुस्सूसावयणंकरा।
तेसिं सिक्खा विवड्ढंति, जलसित्ता व पायवा।।12।।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा, सिप्पा णेउणियाणि य।
गिहिणो उवभोगट्ठा, इहलोगस्स कारणा।।13।।

जेण बंधं वहं घोरं, परियावं च दारुणं।
सिक्खमाणा नियच्छंति, जुत्ता ते ललिइंदिया।।14।।
ते वि तं गुरुं पूयंति, तस्स सिप्पस्स कारणा।
सक्कारंति नमंसंति, तुट्ठा निद्देसवत्तिणो।।15।।
किं पुण जे सुयग्गाही, अणंतहियकामए।
आयरिया जं वए भिक्खू, तम्हा तं नाइवत्तए।।16।।
नीयं सेज्जं गइं ठाणं, नीयं च आसणं तहा।
नीयं च पाएँ वंदेज्जा, नीयं कुज्जा य अंजलिं।।17।।
संघट्टइत्ता काएणं, तहा उवहिणा अवि।
'खमेह अवराहं मे', वएज्ज 'न पुणो' त्ति य।।18।।
दुग्गवो वा पओएणं, चोइओ वहई रहं।
एवं दुब्बुद्धि किच्चाणं, वुत्तो वुत्तो पकुव्वई।।19।।
कालं छंदोवयारं च, पडिलेहित्ताण हेउहिं।
तेण तेण उवाएणं, तं तं संपडिवायए।।20।।
विवत्ती अविणीयस्स, संपत्ती विणियस्स य।
जस्सेयं दुहओ नायं, सिक्खं से अभिगच्छई।।21।।
जे यावि चंडे मइइड्ढिगारवे, पिसुणे नरे साहस हीणपेसणे।
अदिट्ठधम्मे विणए अकोविए, असंविभागी न हु तस्स मोक्खो।।22।।

निद्देसवत्ती पुण जे गुरूणं, सुयत्थधम्मा विणयम्मि कोविया।
तरित्तु ते ओहमिणं दुरुत्तरं, खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गय।।23।।
त्ति बेमि।।

।। विणयसमाहीए बीओ उद्देसओ समत्तो।।

विणयसमाहीए तइओ उद्देसओ

आयरियऽग्गिमिवाऽऽहियग्गी, सुस्सूसमाणो पडिजागरेज्जा।
आलोइयं इंगियमेव णच्चा, जो छंदमाराहयई, स पुज्जो।।1।।
आयारमट्ठा विणयं पउंजे, सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्कं।
जहोवइट्ठं अविकंपमाणो, जो छंदमाराहयई, स पुज्जो।।2।।
राइणिएसु विणयं पउंजे, डहरा वि य जे परियायजेट्ठा।
नियत्तणे वट्टइ सच्चवाई, ओवायवं वक्ककरे, स पुज्जो।।3।।
अन्नायउंछं चरई विसुद्धं, जवणट्ठया समुयाणं च निच्चं।
अलद्धुयं नो परिदेवएज्जा लद्धुं, न विकंथयई, स पुज्जो।।4।।
संथार-सेज्जाऽऽसण-भत्त-पाणे, अप्पिच्छया अवि लाभे वि संते।
जो एवमप्पाणऽभितोसएज्जा, संतोसपाहन्नरए, स पुज्जो।।5।।

सक्का सहेउं आसाएँ कंटया, अओमया उच्छहया नरेणं।
अणासए जो उ सहेज्ज कंटए, वईमए कण्णसरे स पुज्जो।।6।।
मुहुत्तदुक्खा हु भवंति कंटया, अओमया ते वि तओ सुउद्धरा।
वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि, वेराणुबंधीणि महब्भयाणि।।7।।
समावयंता वयणाभिघाया, कण्णंगया दुम्मणियं जणंति।
धम्मो त्ति किच्चा परमग्गसूरे, जिइंदिए जो सहई स पुज्जो।।8।।
अवण्णवायं च परम्मुहस्स, पच्चक्खओ पडिणीयं च भासं।
ओहारिणिं अप्पियकारिणिं च, भासं न भासेज्ज सया स पुज्जो।।9।।
अलोलुए अक्कुहए अमायी, अपिसुणे यावि अदीणवित्ती।
नो भावए नो वि य भावियप्पा, अकोउहल्ले य सया स पुज्जो।।10।।
गुणेहिँ साहू अगुणेहऽसाहू, गेण्हाहि साहूगुण मुंचऽसाहू।
वियाणिया अप्पगमप्पएणं, जो राग-दोसेहिँ समो स पुज्जो।।11।।
तहेव डहरं व महल्लगं वा, इत्थी पुमं पव्वइयं गिहिं वा।
नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा, थंभं च कोहं च चए स पुज्जो।।12।।
जे माणिया सययं माणयंति, जत्तेण कन्नं व निवेसयंति।
ते माणए माणरिहे तवस्सी, जिइंदिए सच्चरए स पुज्जो।।13।।
तेसिं गुरूणं गुणसागराणं, सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं।
चरे मुणी पंचजए तिगुत्ते, चउक्कसायावगए स पुज्जो।।14।।

गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी, जिणवयनिउणे अभिगमकुसले।
धुणिय रय-मलं पुरेकडं, भासुरमउलं गइं गय।।15।।
त्ति बेमि।।

।।विणयसमाहीए तइओ उद्देसओ समत्तो।।

विणयसमाहीए चउत्थो उद्देसओ

सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता।।1।।
कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता?
इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता।।2।।
तं जहा-विणयसमाही, सुयसमाही, तवसमाही, आयारसमाही ।।3।।
विणए, सुए तवे य आयारे निच्चं पंडिया।
अभिरामयंति अप्पाणं जे भवंति जिइंदिया।।4।।
चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ। तं जहा- अणुसासिज्जंतो सुस्सूसइ, सम्मं संपडिवज्जइ, वेयमाराहइ, न य भवइ अत्तसंपग्गहिए चउत्थं पयं भवइ।।5।।

भवइ य एत्थ सिलोगो-

पेहेइ हियाणुसासणं, सुस्सूसई तं च पुणो अहिट्ठए।
न य माणमएण मज्जई, विणयसमाहीए आययट्ठिए ।।6।।

चउव्विहा खलु सुयसमाही भवइ। तं जहा- 'सुयं मे भविस्सइ' त्ति अज्झाइयव्वं भवइ, 'एगग्गचित्तो भविस्सामि' त्ति अज्झाइयव्वं भवइ, 'अप्पाणं ठावइस्सामि' त्ति अज्झाइयव्वं भवइ, 'ठिओ परं ठावइस्सामि' त्ति अज्झाइयव्वं भवइ चउत्थं पयं भवइ।।7।।

भवइ य एत्थ सिलोगो-

नाणमेगग्गचित्तो य, ठिओ ठावयई परं।
सुयाणि य अहिज्जित्ता, रओ सुयसमाहिए।।8।।

चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ। तं जहा-नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा, नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा, नो कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा, नऽन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा चउत्थं पयं भवइ।।9।।

भवइ य एत्थ सिलोगो-

विविहगुणतवोरए य निच्चं, भवइ निरासए निज्जरट्ठिए।
तवसा धुणइ पुराणपावगं,जुत्तो सया तवसमाहिए।।10।।

चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ। तं जहा-नो इहलोगट्ठयाए

आयारमहिट्ठेज्जा, नो परलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा, नो कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा, नऽन्नत्थ आरहंतिएहिं हेऊहिं आयारमहिट्ठेज्जा चउत्थं पयं भवइ ।।11।।

भवइ य एत्थ सिलोगो-

जिणवयणरए अतिंतिणे, पडिपुण्णाययमाययट्ठिए।
आयारसमाहिसंवुडे, भवइ य दंते भावसंधए ।।12।।

अभिगयचउरोसमाहिओ, सुविसुद्धो सुसमाहियप्पओ।
विउलहियसुहावहं पुणो, कुव्वइ सो पयखेममप्पणो।।13।।

जाई-मरणाओ मुच्चई, इत्थंथं च जहाति सव्वसो।
सिद्धे वा भवइ सासए, देवे वा अप्परए महिड्ढिए।।14।।

त्ति बेमि।।

।। विणयसमाहीए चउत्थो उद्देसओ समत्तो।।

।। नवमं विणयसमाहिअज्झयणं समत्तं ।।

दसमं सभिक्खूअज्झयणं

निक्खम्ममाणाय बुद्धवयणे, निच्चं चित्तसमाहिओ भवेज्जा।
इत्थीण वसं न यावि गच्छे, वंतं नो पडियावियति सभिक्खू।।1।।
पुढविं न खणे न खणावए, सीओदगं न पिए न पियावए।
अगणिसत्थं जहा सुनिसियं, तं न जले न जलावए सभिक्खू।।2।।
अनिलेण न वीए न वीयावए हरियाणि न छिंदे न छिंदावए।
बीयाणि सया विवज्जयंतो, सच्चित्तं नाऽऽहारए सभिक्खू।।3।।
वहणं तस-थावराण होइ, पुढवि-दग-कट्ठनिस्सियाणं।
तम्हा उद्देसियं न भुंजे, नो वि पए न पयावए सभिक्खू।।4।।
रोइय नायपुत्तवयणं, अत्तसमे मन्नेज्ज छप्पि काए।
पंच य फासे महव्वयाइं, पंचासवसंवरए य सभिक्खू।।5।।
चत्तारि वमे सया कसाए, धुवजोगी य हवेज्ज बुद्धवयणे।
अहणे निज्जायरूव-रयए ,गिहिजोगं परिवज्जए सभिक्खू।।6।।
सम्मद्दिट्ठि सया अमूढे, अत्थि हु नाणे तवे य संजमे य।
तवसा धुणइ पुराणपावगं, मण-वइ-कायसुसंवुडे सभिक्खू।।7।।
तहेव असणं पाणगं वा, विविहं खाइमसाइमं लभित्ता।
होहिति अट्ठो सुए परे वा, तं न निहे न निहावए सभिक्खू।।8।।

तहेव असणं पाणगं वा, विविहं खाइमसाइमं लभित्ता।
छंदिय साहम्मियाण भुंजे, भोच्चा सज्झायरए य जे स भिक्खू।।9।।
न य विग्गहियं कहं कहेज्जा, न य कुप्पे निहुइंदिए पसंते।
संजमधुवजोगजोगजुत्ते, उवसंते अविहेडए स भिक्खू।।10।।
जो सहइ हु गामकंटए, अक्कोस-पहार-तज्जणाओ य।
भय-भेरवसद्दसंपहासे, समसुह-दुक्खसहे य जे स भिक्खू।।11।।
पडिमं पडिवज्जिया सुसाणे, नो भाए भय-भेरवाइँ दिस्स।
विविहगुण-तवोरए य निच्चं, न सरीरं अभिकंखई सभिक्खू।।12।।
असइं वोसट्ठ-चत्तदेहे, अक्कुट्ठे व हए व लूसिए वा।
पुढवीसमए मुणी हवेज्जा, अनियाणे अकुतूहले सभिक्खू।।13।।
अभिभूय काएण परीसहाइं, समुद्धरे जाइपहाओ अप्पयं।
विइत्तु जाई-मरणं महब्भयं, भवे रए सामणिए सभिक्खू।।14।।
हत्थसंजए पायसंजए, वायसंजए संजइंदिए।
अज्झप्परए सुसमाहियप्पा, सुत्तत्थं च वियाणई सभिक्खू।।15।।
उवहिम्मि अमुच्छिए अगढिए, अण्णाउंछपुलाए णिप्पुलाए।
कय-विक्क य-सन्निहीओ विरए, सव्वसंगावगए सभिक्खू।।16।।
अलोलु भिक्खू न रसेसु गिद्धे, उंछं चरे जीविय नाभिकंखे।
इड्ढिं च सक्कारण पूयणं च, जहे ठियप्पा अणिहे सभिक्खू।।17।।

न परं वएज्जासि 'अयं कुसीले', जेणऽन्नो कुप्पेज्ज न तं वएज्जा।
जाणिय पत्तेय पुण्ण-पावं, अत्ताणं न समुक्कसे सभिक्खू।।18।।
न जाइमत्ते न य रूवमत्ते, न लाभमत्ते न सुएण मत्ते।
मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता, धम्मज्झाणरए य जे स भिक्खू।।19।।
पवेयए अज्जपयं महामुणी, धम्मे ठिओ ठावयई परं पि।
निक्खम्म वज्जेज्ज कुसीललिंगं, न यावि हस्सक्कुहए सभिक्खू।।20।।
तं देहवासं असुइं असासयं, सया जहे निच्चहिए ठियप्पा।
छिंदित्तु जाई-मरणस्स बंधणं, उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइं।।21।।
त्ति बेमि।।

।। दसमं सभिक्खूअज्झयणं समत्तं।।

पढमा रइवक्का चूला

इह खलु भो! पव्वइएणं उप्पन्नदुक्खेणं संजमे अरइसमावन्नचित्तेणं ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएणं चेव हयरस्सि-गयंकुस-पोयपडागारभूयाइं इमाइं अट्ठारस ठाणाइं सम्मं पडिलेहियव्वाइं भवंति।तं जहा-

हंभो ! दुस्समाए दुप्पजीवं[1]। लहुस्सगा इत्तिरिया गिहीणं कामभोगा[2]। भुज्जो य साइबहुला मणुस्सा[3]। इमं च मे दुक्खं न चिरकालोवट्ठाइ

भविस्सइ[4]। ओमजणपुरक्कारे[5]। वंतस्स य पडियाइयणं[6]। अहरगइवासोवसंपया[7]। दुल्लभे खलु भो गिहीणं धम्मे गिहवासमज्झे वसंताणं[8]। आयंके से वहाय होइ[9]। संकप्पे से वहाय होइ[10]। सोवक्केसे गिहवासे, निरुवक्केसे परियाए[11]। बंधे गिहवासे, मोक्खे परियाए[12]। सावज्जे गिहवासे, अणवज्जे परियाए[13]। बहुसाहारणा गिहीणं कामभोगा[14]। पत्तेयं पुण्ण-पावं[15]। अणिच्चे मणुयाण जीविए कुसग्गजलबिंदुचंचले[16]। बहुं च खलु पावं कम्मं पगडं[17]। पावाणं च खलु भो! कडाणं कम्माणं पुव्विं दुच्चिण्णाणं दुप्परक्कंताणं वेयइत्ता मोक्खो, नत्थि अवेयइत्ता, तवसा वा झोसइत्ता, अट्ठारसमं पयं भवइ[18]।।1।।

भवइ य एत्थ सिलोगो-

जया य जहई धम्मं, अणज्जो भोगकारणा।
से तत्थ मुच्छिए बाले, आयइं नावबुज्झई।।2।।
जया ओहाविओ होइ, इंदो वा पडिओ छमं।
सव्वधम्मपरिब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पई।।3।।
जया य वंदिमो होइ, पच्छा होइ अवंदिमो।
देवया व चुया ठाणा, स पच्छा परितप्पई।।4।।
जया य पूइमो होइ, पच्छा होइ अपूइमो।
राया व रज्जपब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पई।।5।।

जया य माणिमो होइ, पच्छा होइ अमाणिमो।
सेट्ठि व्व कब्बडे छूढो, स पच्छा परितप्पई।।6।।
जया य थेरओ होइ, समइक्कंतजोव्वणो।
मच्छो गलं गिलित्ता वा, स पच्छा परितप्पई।।7।।
पुत्त-दारपरीकिण्णो, मोहसंताणसंतओ।
पंकोसन्नो जहा नागो, स पच्छा परितप्पई।।8।।
अज्ज ताहं गणी होंतो, भावियप्पा बहुस्सुओ।
जइ हं रमंतो परियाए, सामण्णे जिणदेसिए।।9।।
देवलोगसमाणो उ, परियाओ महेसिणं।
रयाणं अरयाणं तु, महानिरयसालिसो।।10।।
अमरोवमं जाणिय सोक्खमुत्तमं, रयाण परियाऍ तहाऽरयाणं।
निरओवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं, रमेज्ज तम्हा परियाऍ पंडिए।।11।।
धम्माओ भट्ठं सिरिओ ववेयं, जन्नग्गि विज्झायमिवऽप्पतेयं।
हीलंति णं दुव्विहियं कुसीला, दाढुद्धियं घोरविसं व नागं।।12।।
इहेवऽधम्मो अयसो अकित्ती, दुन्नामगोत्तं च पिहुज्जणम्मि।
चुयस्स धम्माओ अहम्मसेविणो, संभिन्नवित्तस्स य हेट्ठओ गई।।13।।
भुंजित्तु भोगाइं पसज्झ चेयसा, तहाविहं कट्टु असंजमं बहुं।
गइं च गच्छे अणभिज्झियं दुहं, बोही य से नो सुलभा पुणो पुणो।।14।।

इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो, दुहोवणीयस्स किलेसवित्तिणो।
पलिओवमं झिज्जइ सागरोवमं, किमंग! पुण मज्झ इमं मणोदुहं?।।15।।
न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सई, असासया भोगपिवास जंतुणो।
न मे सरीरेण इमेणऽवेस्सई, अवेस्सई जीवियपज्जवेण मे।।16।।
जस्सेवमप्पा उ हवेज्ज निच्छिओ, जहेज्ज देहं न य धम्मसासणं।
तं तारिसं नो पयलेंति इंदिया, उवेंतवाया व सुदंसणं गिरिं।।17।।
इच्चेव संपस्सिय बुद्धिमं नरो, आयं उवायं विविहं वियाणिया।
काएण वाया अदु माणसेणं, तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिट्ठए।।18।।
त्ति बेमि।।

।। पढमा रइवक्कचूला नाम चूला समत्ता।।

बिइया चूलिया चूला

चूलियं तु पवक्खामि, सुयं केवलिभासियं।
जं सुणेत्तु सपुण्णाणं, धम्मे उप्पज्जई मई।।1।।
अणुसोयपट्ठिए बहुजणम्मि, पडिसोयलद्धलक्खेणं।
पडिसोयमेव अप्पा, दायव्वो होउकामेणं।।2।।

अणुसोयसुहो लोगो, पडिसोओ आसवो सुविहियाणं।
अणुसोओ संसारो, पडिसोओ तस्स उत्तारो।।3।।
तम्हा आयारपरक्कमेण, संवरसमाहिबहुलेणं।
चरिया गुणा य नियमा य, होंति साहूण दट्ठव्वा।।4।।
अणिएयवासो समुयाणचरिया, अण्णायउंछं पइरिक्कया य।
अप्पोवही कलहविवज्जणा य, विहारचरिया इसिणं पसत्था।।5।।
आइण्ण-ओमाणविवज्जणा य, उस्सन्नदिट्ठाहड भत्त-पाणे।
संसट्ठकप्पेण चरेज्ज भिक्खू, तज्जायसंसट्ठ जई जएज्जा।।6।।
अमज्ज-मंसासि अमच्छरीया, अभिक्खणं निव्विगईगया य।
अभिक्खणं काउस्सग्गकारी, सज्झायजोगे पयओ हवेज्जा।।7।।
न पडिण्णवेज्जा सयणाऽऽसणाइं, सेज्जं निसेज्जं तह भत्त-पाणं।
गामे कुले वा नगरे व देसे, ममत्तिभावं न कहिंचि कुज्जा।।8।।
गिहिणो वेयावडियं न कुज्जा, अभिवायण वंदण पूयणं वा।
असंकिलिट्ठेहि समं वसेज्जा, मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी।।9।।
न या लभेज्जा निउणं सहायं, गुणाहियं वा गुणओ समं वा।
एक्को वि पावाइं विवज्जयंतो, चरेज्ज कामेसु असज्जमाणो।।10।।
संवच्छरं वा वि परं पमाणं, बीयं च वासं न तहिं वसेज्जा।
सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू, सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ।।11।।

जो पुव्वरत्तावररत्तकाले, सारक्खती अप्पगमप्पएणं।
किंमे कडं? किंच मेँ, किच्चसेसं?, किंसक्कणिज्जं न समायरामि?।।12।।
किं मे परो पासइ? किं व अप्पा? किं वाहं खलियं न विवज्जयामि?।
इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो अणागयं नो पडिबंध कुज्जा।।13।।
जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं, काएण वाया अदु माणसेणं।
तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा, आइण्णओ खिप्पमिव क्खलीणं।।14।।
जस्सेरिसा जोग जिइंदियस्स, धिईमओ सप्पुरिसस्स निच्चं।
तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी, सो जीवई संजमजीविएण।।15।।
अप्पा खलु सययं रक्खियव्वो, सव्विंदिएहिं सुसमाहिएहिं।
अरक्खिओ जाइपहं उवेई, सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ।।16।।
त्ति बेमि।।

।। बीया चूलिआ चूला नाम समत्ता।।

।। दसवेयालियं समत्तं।।